।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री राधागोविन्दाय नमः ।।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री लीलानन्द भजनावली ।।

श्रीमद लीलानन्द ठाकुर (पागलबाबा) महाराज के अद्भुत व्यक्तित्व, सत्संगत एवं कृतित्व की सूक्ष्म भावपूर्ण झाँकी तथा महान भक्तों द्वारा संरचित भगवत् पद एवं आरतियों का संक्षिप्त उपयोगी संकलन

श्रीमद् लीलानन्द ठाकुर (पागलबाबा) संकीर्तन मण्डल

१२ए, नेताजी सुभाष रोड, कोलकाता - १, फोन : ०३३-२२३०४१५०

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

पोद्दार भवन, १५३ए, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कोलकाता - ७

स्थापित : १९७९ वार्षिक उत्सव : ०७.०१.२०१८

श्रीमद् लीलानन्द ठाकुर (पागल बाबा) संकीर्तन मण्डल - कोलकाता

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

|| बाबा वाणी ||

❈ एक मना होन् - अर्थात मनुष्य का व्यवहार अन्दर तथा बाहर एक सा हो।

❈ माता पिता की सेवा ही उत्कृष्ट सेवा है।

❈ स्त्री के लिए उसका पति ही भगवान है।

❈ दरिद्र नारायण को भोजन कराने से मनुष्य कभी भी अभावग्रस्त नहीं होता है।

❈ अहंकार ही मनुष्य के पतन का मूल कारण है।

❈ जीवन में शान्ति के लिए नाम संकीर्तन ही अनमोल औषधि है।

❈ रोजाना माता पिता के चरणों को प्रणाम करना प्रत्येक मनुष्य का धर्म है।

❈ बड़ो का आदर करने से हम छोटों से आदर पाने के हकदार है।

❈ प्रत्येक जीव की सेवा ही सर्वोतम भगवत् पूजा है।

❈ निःस्वार्थ भजन कीर्तन ही भगवत् प्राप्ति का सुगम साधन है।

❈ हरि के स्वरुप से हरि का नाम श्रेष्ठ है।

श्रीमद् श्री लीलानन्द ठाकुर (पागलबाबा)

का

संक्षिप्त जीवन परिचय

परम पूज्य सन्त शिरोमणि श्रीमद् लीलानन्द ठाकुर (पागलबाबा) का जन्म उच्च ब्राह्मण कुल में बलता रतनगंज (टंगाईल) जिला मैमन सिंह सम्प्रति वर्तमान बंगलादेश में हुआ था। पूज्य पिता का नाम श्री कालीचरण चक्रवर्ती एवं पूज्या माता का नाम श्रीमति अन्नपूर्णा देवी था। परिवार का वातावरण धार्मिक था। पिता अपना व्यवसाय चलाते थे। बाबाश्री, अपने पिता के व्यवसाय में उनको अल्पसमय के लिए ही सहयोग दे पाये।

पुत्र को सांसारिक मार्ग पर चलाने के लिए उनके माता-पिता ने एक उच्च कुलीन ब्राह्मण कन्या से उनका विवाह कर दिया। धर्मपत्नी का नाम सुदेवी था। मां सुदेवी अपने भागवत् पति की सच्चे अर्थों में अर्द्धांगिनी थी। वे अत्यंत धार्मिक निष्ठावान और पतिव्रता थी। सन् १९४६ के आस-पास जब हिमाचल भारत भूमि खंडित नहीं हुई थी, राजनेताओं के दांव पेंच में पड़कर देश के मानचित्र पर विभाजन की रेखायें नहीं खिंची थीं, इसी समय परिव्राजक श्री लालानंद ठाकुर आसाम की ओर चल पड़े। आसाम के ग्वाल पाड़ा जिले में सापट ग्राम नामक स्थान है जहाँ बाबाश्री

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

आकर रुके। बाबाश्री ने वहाँ आश्रम बनाने का संकल्प लिया तथा वहाँ एक वृहद् आश्रम की स्थापना हुई जिसका नाम '**शांतिपुर आश्रम**' रखा गया। '**नामघर**' यानि श्री राधागोविन्द मंदिर को केन्द्र में रखकर मूल आश्रम का विस्तार होता चला गया। सापट ग्राम आश्रम के पश्चात् बाबाश्री भक्त मंडली के साथ ग्राम-ग्राम अंचल-अंचल में संकीर्तन सुधा को प्रवाहित करते हुए आसाम प्रदेश के दरंग जिला के बड़झार में पधारे। बाबाश्री ने यहाँ पर '**वीरेन्द्र नगर**' आश्रम की स्थापना की। इस आश्रम में भी शांतिपुर आश्रम की भाँति श्री राधागोविन्द के विग्रह की स्थापना हुई। समय के अंतराल में बाबाश्री ने श्री वृंदावन धाम में '**लीला कुँज**' के नाम से एक और आश्रम स्थापित किया तत्पश्चात् २० फरवरी १९६७ को बाबाश्री ने जसीडीह, देवघर में '**श्रीनिवास आंगन**' के नाम से एक और आश्रम की स्थापना की। सन् १९६५ में वृन्दावन में बाबाश्री द्वारा परिकल्पित श्वेत संगमरमर का नौ मंजिला मंदिर निर्माण हेतू शिलान्यास किया। श्री राधागोविन्द जी का भव्य मंदिर का निर्माण कराया जो आज वृन्दावन का एक अद्वितीय दर्शनीय स्थल है। वृन्दावन में ही बाबाश्री ने मंदिर के निकट एक विशाल चिकित्सालय की भी आधार शिला १४ दिसम्बर १९७८ को रखी। २४ जुलाई सन् १९८० ई.

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

विक्रम सम्वत् २०३७ को बाबाश्री का नश्वर शरीर वृन्दावन धाम में पंचतत्वों में लीन हो गया, किन्तु उनकी शाश्वत वाणी, संकीर्तन सुधा और राधागोविन्द के अमृतरुप भजन जन-जन के मानस को पावन बना रही है। बाबाश्री अपने हाथों में सर्वदा एक **'लाल रुमाल'** रखते थे। भक्तों में यह मान्यता है कि जिसके सर पर भी बाबा ने रुमाल स्पर्श किया उनके सारे दु:खों का निवारण हुआ।

श्रीलीलानन्द ठाकुर पागलबाबा के संकीर्तन मंडल के वार्षिकोत्सव में पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज ने कहा कि 'इस संसार में प्रभु के असंख्य भक्त हैं जिन्होंने स्वयं को विभिन्न उपाधियों से अलंकृत किया, जैसे मंडलेश्वर, महामंडलेश्वर, जगद्गुरु आदि। किन्तु पागलबाबा ही एक ऐसे सद्गुरु है जिन्होंने अपने नाम के साथ **'पागल'** शब्द कहलवाया। वे आगे कहते हैं पंजाबी में गल का अर्थ है बात करना, पागल अर्थात जो ईश्वर प्राप्ति की बात करते हैं वो पागल है और ऐसा पागल होना परम सौभाग्य की बात है।' कलियुग में ऐसे सद्गुरु को पाना बाबाश्री के भक्तों के लिए सौभाग्य की बात है।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमः ।।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। दो शब्द ।।

आदरणीय पाठकवृन्द,

श्रीमद् लीलानन्द ठाकुर (पागलबाबा) संकीर्तन मण्डल द्वारा प्रकाशित श्री लीलानन्द भजनावली को ज्ञान वैराग, भक्ति एवं करुणामय भजनों से सुसज्जित कर आपके सामने प्रस्तुत करते हुये अपार हर्ष हो रहा है।

वर्तमान भौतिकवादी समाज में सिर्फ भगवान्नाम ही ऐसा मार्ग है जो सबके लिये सुलभ है इसमें उच्च-नीच वर्णावर्ण और जाति-पाति आदि किसी प्रकार का भेदभाव नहीं है। यों तो प्रत्येक काल और स्थिति में हरिनाम प्रभावकारी रहा है पर आज कलियुग की इस घोर विभीषका में जब कि मनुष्य हर तरह से अस्वस्थ है, उनकी आत्मा पंगु हो गई है, अन्तर विषयासक्त एवं विषाक्त हो गया है। ऐसे में भजनामृत ही सुलभ साधन है, जो बिना मूल्य ही प्राप्त हो जाता है, आत्मा, मन एवं शरीर को निर्मल करता है।

हरे राम हरे कृष्ण कृष्ण कृष्णेति मंगलम्।
एवं वदन्ति ये नित्यं... हि तान् बाधते कलि।।

(पद्मपुराण. ४/०८/२-३)

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

अर्थात जो मनुष्य हरे राम ! हरे कृष्ण ! ! ऐसा सदा कहते हैं उन्हें कलियगु बाधा पहुँचा ही नहीं सकता।

भक्त शिरोमणी चैतन्य महाप्रभु ने यहाँ तक कहा है कि-

धन्य धन्य कलियुग सर्वयुग सार,
हरि नाम संकीर्तन जाहाते प्रचार,
एक बार कृष्ण नाम जत पाप हरे,
जीवेर साध्य नेई तत पाप करे ।।

भक्त प्रवर सन्त श्री तुलसीदास जी ने भी हरिनाम की महत्ता का वर्णन करते हुये कहा है कि अमंगलों से भरे इस कलिकाल में यज्ञ, तप, पूजा तथा योगादि क्रियाएँ सफल नहीं हो पाती, ऐसे में केवल हरिनाम अमोघास्त्र है। जैसा कि उन्होंने कहा-

कलियुग केवल नाम अधारा, सुमिरि सुमिरि नर उतरहिं पारा।
नहीं कलि करम न भगति विवेकू, राम नाम अवलम्बन एकू।
सो भवतर कछु संशय नाहीं, नाम प्रताप प्रगट कलि मांही।

जो मानव अपना स्व-भूलकर सर्वस्व उस सच्चिदानन्द भगवान को अर्पण कर नित्य निरन्तर प्रभु नाम रस में लीन रहकर गुरुजनों का आदर करता हुआ निज कर्म पथ पर अग्रसर होता है वही सच्चा साधक है। अतः भगवान्नाम रस माधुरी की महत्ता को जन-जन तक प्रवाहित करने के उद्देश्य से ही हमारे परम पूज्यनीय प्रातः वन्दनीय गुरु महाराज श्री पागलबाबा ने इस मण्डल की स्थापना हेतु हमें प्रेरित किया। मण्डल का मूल उद्देश्य जगतपति के नाम की

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।।
।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।।

आराधना एवं नाम महिमा का प्रचार। हमारा लक्ष्य है संकीर्तन जिसमें न प्रदर्शन हो न आडम्बर न ही भेदभाव। मण्डल की स्थापना बाबाश्री के आदेशानुसार सन् १९७९ में हुई।

इस मण्डल का साप्ताहिक कीर्तन प्रत्येक रविवार को अपराह्न ३-३० से ५.३० तक संकीर्तन प्रेमियों के यहाँ होता है। इस मण्डल के मुख्य एवं आवश्यक नियम निम्नलिखित हैं -

१. कीर्तन में सिर्फ बताशा का ही प्रसाद लगाया जाता है।

२. जिस भक्त के यहाँ कीर्तन हो, वहाँ चाय, पान या नाश्ता किसी प्रकार का भी व्यवहारिक शिष्टाचार वर्जित है। पेयजल भी आवश्यकतानुसार आगन्तुक भक्तगण स्वयं कीर्तन स्थल से उठकर बाहर जाकर ग्रहण कर सकता है। कीर्तन के मध्य जल वितरण भी वर्जित है।

३. हमारे कीर्तन में जो मूर्तियाँ राधागोविन्द एवं बाबाश्री की लगाई जाती है, उसे मण्डल के कार्यालय से लाने और पहुँचाने का कार्य भी उन्हीं भक्त का होगा जिनके यहाँ कीर्तन होगा।

४. मण्डल हरिनाम-संकीर्तन को ही विशेष महत्व देता है।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

५. कीर्तन के मध्य किसी प्रकार का भी वार्तालाप वर्जित है। भगवन्नाम के अलावा अन्य वार्तालाप कीर्तन के के मध्य निषेध है।

मण्डल को पूरी आशा है कि भक्तगण उपरोक्त नियमों का पालन करते हुए हमें आगे बढ़ने में समुचित सहयोग प्रदान करेंगे और हमारे उत्साह को बढ़ायेंगे। जन सहयोग से ही मण्डल उन्नति की ओर अग्रसर हो सकता है।

मण्डल की रजत जयन्ती महोत्सव जो कि २५ जनवरी सन् २००४, को कोलकाता महानगर के मध्य स्थित मोहम्मद अली पार्क में मनाया गया, जिसमें बाबाश्री के दिव्य रुप, अलौकिक श्रृंगार एवं समारोह की भव्यता की चर्चा आज भी होती है।

इस भजन पुस्तिका में व्याकरण या शब्दों की कोई त्रुटि रह गई हो तो पाठकवृन्द स्वयं सुधार कर हमें अनुगृहित करें।

विनीत :

श्रीमद् लीलानन्द ठाकुर

पागल बाबा संकीर्तन मण्डल

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

विषय-सूची

भजन	पृष्ट सं.	भजन	पृष्ट सं.
बाबा चालीसा	१	था बिण नैया भव स	२६
जय गणेश जय गणेश	३	क्यूँ हार बसन्ती पहरो	२७
गणपत बलकारी	४	अब तो अरजी सुनलो	२८
म्हारा प्यारा गजानन्द	५	दरबार अनोखा	२९
गणराज लाज मेरी	६	अँखियों में नमी सी	३०
गुरुदेव दया करके	७	आओ जी आओ म्हारा	३१
गुरु मेरी पूजा	८	ले कर मे लाल रुमाल	३२
मेरे भी मीत बनो ना	९	श्री वृन्दावन में वास करे	३३
गुरु शरणं मम्	१०	जपूँ बाबा तेरा नाम	३४
बैठा हूँ चरणों में	११	करो कृपा ये आंगन	३५
अभी भी समय है	१२	दर पे तेरे है आई	३६
गुरुदेव थारा चरणां शीश	१३	द्वार पे आये हैं शरण	३७
नैया भंवर से	१४	जग से निराला है	३८
गुरुदेव मेरे तू आजा	१५	बिगड़ी मेरी बना दे	३९
कृपा तुम्हारी चाहिए	१६	कौन सुणैलौ, किने	४०
मम नमः गुरुदेवाय	१७	डगमग डोले खाये	४१
गुरुदेव शरण तेरी	१८	बाबा थार द्वार आया	४२
लाल रुमाल तेरी जादू	१९	बाबा तेरे नाम का	४३
ओ सुनरे सापटवाले	२०	बाबा ओ सापटवाले	४४
आधार हो इक तेरा	२१	बाबा कहूँ या लीलाधारी	४५
चाहे मुझे जितनी बाबा	२२	है दीनों का रखवाला	४६
मेरे बाबा अगर मुझको	२३	बाबा कैयां थानै रिझाऊँ	४७
दीनाबन्धु करुणासिन्धु	२४	भक्त आये शरण में	४८
लीलानन्द तेरी लीला	२५	बाबा मेरे सिर पे हाथ	४९

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

विषय-सूची

भजन	पृष्ट सं.
जो मैं होता लीलानन्द	५०
आ लौट के आजा	५१
मेरे बाबा हम भक्तों की	५२
आ जाओ मेरे लीलाधारी	५३
लीलानन्द भजो प्यारे	५४
तेरी जादू की रुमलिया	५५
ओ हो सापटवाले न	५६
भोला भाला, भोला भाला	५७
हे लीलानन्द महाराज हम	५८
मुझे चिन्ता है किसकी	५९
चरणां री भक्ति	६०
तेरे बिना नाथ हमारा	६१
दे दो ना धुलि चरणन	६२
बाबा तकदीर मेरी मुझसे	६३
धीरे धीरे मेरी जिन्दगी	६४
प्रेम का धागा तुमसे	६५
इतना क्या कम है	६६
मेरे लीलानन्द महाराज	६७
लीलानन्द को सदा तूने	६८
लीलानन्द भजो प्यारे	६९
सापटवाले लीलाधारी हम	७०
ओ बाबा कब तुम दया	७१
बाबा थानै आयां सरसी	७२
बाबा हमारा हमसे रुठ	७३

भजन	पृष्ट सं.
हे लीलानन्द बाबा तेरी याद	७४
अरदास हमारी है आधार	७५
बिगड़ी मेरी बनादे ओ	७६
म्हारा लीलानन्द सरकार	७७
फागुण को मेलो यो तो	७८
फागुण की छायी बदरिया	७९
महिनों फागुण को बाबाजी	८०
श्री राधे गोविन्दा गोपाला	८१
ओ मेरे साँवरे मेरी	८२
तुम झोली भर लो भक्तों	८३
बस इतनी तमन्ना है	८४
देना हो तो दिजिए	८५
जनम जनम का साथ है	८६
आयो रे आयो देखो	८७
झाँकी निहारुँ तोहार	८८
छोटी-छोटी गईंयाँ	८९
बृज के नन्दलाला	९०
मैने ओढ़ लई, ओढ़नी	९१
लिखने वाले ने लिख	९२
बनवारी रे जीने का	९३
आओ कन्हैया आओ	९४
ओ पालनहारे निर्गुण	९५
मन बस गयो नन्दकिशोर	९६
हे गिरधर गोपाल लाल	९७

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

विषय-सूची

भजन	पृष्ट सं.	भजन	पृष्ट सं.
राधिका गौरी से	९८	एक दिन वो भोला	१२३
आ गया मुरलीवाला	९९	तेरे ख्यालों में खोया	१२४
सुन श्याम मुरलीवाले	१००	हरि ॐ नमः शिवाय	१२५
तेर नाम का पुजारी	१०१	अंजणी को लाल निरालो	१२६
बैठी हो मा सामने	१०२	छम छम छम छम छम	१२७
आ जाओ मेरी मैया	१०३	हे दुखभंजन मारुति	१२८
जोगी तेरे द्वार का	१०४	राम से बड़ा राम	१२९
जाने वाले एक संदेशा	१०५	लाल लंगोटो हाथ म	१३०
जगदम्बे भवानी मैया	१०६	न स्वर है न सरगम	१३१
दे दो थोड़ा प्यार	१०७	रखवाला प्रतिपाला	१३२
तूने मुझे बुलाया	१०८	बजरंग बाला जपूँ	१३३
कोहिनूर का जलवा	१०९	छम छम नाचै देखो	१३४
तुम्ही मेरी मैया	११०	मात पिता प्रभु गुरु	१३५
मेरे सिर पे सदा	१११	मैली चादर ओढ़ के	१३६
हे नाम रे सबसे बड़ा	११२	भाव का भूखा हूँ मैं	१३७
भावना की ज्योत को	११३	भला करो भगवान	१३८
मेरा आपकी कृपा से	११४	तोरा मन दर्पण	१३९
मैया का नाम लेकर	११५	कभी प्यासे को पानी	१४०
नाचो गाओ खुशी मनाओ	११६	विपदा की घड़ियों	१४१
है नाम ये जो प्रभु से	११७	इस योग्य हम कहाँ	१४२
फरियाद मेरी सुन के	११८	दशा मुझ दीन की	१४३
शिव डमरु वाले को	११९	तुम हमारे थे प्रभु	१४४
शंकर दया है बाँटते	१२०	लागी लगन मत तोड़ना	१४५
मुझे ऐसा वर दे दो	१२१	सद्गुरुदेव आरती	१४६
बम बम भोले शंकर	१२२	श्रीकुंजबिहारी आरती	१४७

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

श्री लीलानन्द ठाकुर (पागलबाबा) चालीसा

साँवरी सलौनी शुचि सूरति तिहारी सन्त,
आसन जमाइ पूजा करी आठों याम की।
साधना सफल सिद्ध भये बाबा पागल जू,
धुनि पहुँचाई गेह गेह हरिनाम की।।
सापट में कुटिया बनाई कीर्तन कियो,
कण्ठ सों मयंक गूँज उठी राधेश्याम की।
लीलाकुंज वृन्दावन वास करि लीलानन्द,
आश्रम बनायो शोभा भई लीलाधाम की।।

गिरिजा शम्भु गणेश कूँ, अन्तर मांहि निहारी।
बरनहु लीलानन्द यस, चालीसा सुखकारी।।
गुरु पद रज मस्तक धरुँ, ध्यान करुँ चित लाय।
बन्दहुँ माता शारदा, पावन चरित रचाय ।।

जय जय लीलानन्द तुम्हारी । रुप मनोहर शोभा न्यारी ।।
धरम देत अवतारे स्वामी । भक्त शिरोमणि अन्तर्यामी ।।
पागल बाबा जग विख्याता । दीन जनों के हो सुखदाता ।।
सिद्ध रुप से दर्शन देते । क्षण भर में संकट हर लेते ।।
अन्नपूर्णा सुत छवि श्यामा । मन मोहक मूरति अभिरामा ।।
कालीचरण पूत अति प्यारे। भगा रहे उर के अंधियारे ।।
प्रेरक सती सुदेवी नारी । उर में खिली ज्ञान उजियारी ।।
बंग देश में जन्म तुमहारा । आये हरन भूमि भव भारा ।।
विद्या विनय शील गुण सागर । हम सबके प्रेम उजागर ।।
सपाटवाले सन्त निराले । श्याम सलौने भोले भाले ।।
रस हरिनाम तुम्हारी रसना । राधा कृष्ण नाम की रटना ।।
मातृशक्ति पदरज आराधक । भक्तिमती मेधा के याचक ।।
प्रभु संकीर्तन के व्रतधारी । गूँज रही है कीर्ति तुम्हारी ।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

साधक यती सर्व सुखदायक । सरल साधु सत्पथ अधिनायक ।।
आश्रम तुमने रचे अनेका । भव्य विशाल एक ते एका ।।
वृन्दावन में हुआ आगमन । दर्शन पाकर प्रमुदित जन जन ।।
आश्रम लीला कुञ्ज अनूपा । पधराये अति दिव्य स्वरुपा ।।
स्वप्न हुआ तब जागी निष्ठा । करी इष्ट की प्राण प्रतिष्ठा ।।
जुगल जोरि हरि गौरि निताई । एक और शिव दुर्गा माई ।।
गुंजित अविरल कीर्तन के स्वर । पावन किये हमारे घर घर ।।
सुन्दर लीलाधाम बसाया । नौ मंजिल मन्दिर बनवाया ।।
श्रीगणपति राधे - गोविन्दा । दाऊ-कृष्ण यशोदा नन्दा ।।
राम-लखन-सिय गौर निताई । लक्ष्मी - नारायण - प्रभुताई ।।
ओम रुप वामन भगवन्ता । दर्शन करते भक्त अनन्ता ।।
लालरंग रुमाल घुमाया । चमत्कार विस्तारी माया ।।
तव महिमा जो कोई गावे । ताके निकट रोग नहिं आवे ।।
मात भवानी बस में तेरे । हरो नाथ दुख दारिद्र घनेरे ।।
दीनबन्धु तुम दीन दयाला । भगत हेत अमृत रस प्याला ।।
तुम चाहत जग को कल्याना । आशिष देते हो मनमाना ।।
जब जब दीन जननु तुम टेरे । तिनके निर्धनता दिन फेरे ।।
दृष्टि वृष्टि फूली फुलवारी । भक्त वृन्द होते बलिहारी ।।
तुम समान स्वामी नहिं दूजा । करते सेवक नित प्रति पूजा ।।
मुनिवर सौम्य भाव कछु दीजे । अपनी शरण हमें तुम लीजे ।।
धन्य आपकी मंगल करनी । पावन करदी तुमने धरनी ।।
कण्ठ कण्ठ में नाम तिहारो । पूरण कीजे काज हमारो ।।
जग में जितने तीरथ पावन । सब में तुम्हरो नाम सुहावन ।।
तुम हो दानिनु के प्रभु दानी । बोल रही जन जन की बानी ।।
ऐसी दया तुम्हारी पाऊँ । श्यामा-श्याम गीत नित गाऊँ ।।
लीलानन्द चरित चालीसा । रच्यो मयंक चरन धरि सीसा ।।
प्रेम सहित जो कोई गावे । बसि गोलोक परम पद पावै ।।

भक्ति भाव से नित्य प्रति, पाठ करे जो कोय।
गुरु की कृपा कटाक्ष ते, सफल मनोरथ होय।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री गणेश वन्दना ।।

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा
माता थारी पार्वती पिता महादेवा।।टेर।।

पान चढ़े, पुष्प चढ़े और चढ़े मेवा,
लड्डुवन को भोग लागै सन्त करे सेवा,
जय गणेश...।।१।।

एक दन्त दयावन्त चार भुजाधारी,
माथे पर सिन्दुर सोहे, मूसे की असवारी,
जय गणेश...।।२।।

अंधन को आँख देवे, कोढ़ियन की काया,
बाँझन को पुत्र देवे, निर्धन को माया,
जय गणेश...।।३।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री गणेश वन्दना ।।

गणपत बलकारी जी, फतह म्हारी आज करो।
रिद्ध-सिद्ध के दाता जी, फतह म्हारी आज करो।।

कुण तो तुम्हारो देवा, पिता रे कुहावे।
कुण थारी माताजी, फतह म्हारी आज करो।।१।।

पिता तो तुम्हारो देवा है शिवशंकर।
माता पार्वती, फतह म्हारी आज करो।।२।।

गुड़ के मोदक भोग लगत हैं।
फुलड़ारी मालाजी, फतह म्हारी आज करो।।३।।

रणत भवन सूँ थे आवोजी विनायक।
ऋद्धि-सिद्धि ल्यावोजी, फतह म्हारी आज करो।।४।।

बाबा मण्डल अरदास करत है।
थे संकट काटो जी, फतह म्हारी आज करो।।५।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।
।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

|| श्री गणेश वन्दना ||

म्हारा प्यारा गजानन्द आईज्यो,
रिद्ध-सिद्ध न साग लाईज्यो जी,
म्हारा प्यारा गजानन्द....

थाने सबसे पहल्यां मनावां
लड्डुवन को भोग लगावां
थे मूसे चढ़कर आईज्यो जी,
म्हारा प्यारा गजानन्द...||१||

माँ पार्वती का प्यारा,
शिवशंकर लाल दुलारा,
थे बाँध पागड़ी आईज्यो जी,
म्हारा प्यारा गजानन्द...||२||

थे रिद्ध सिद्ध का दातारी,
थाने ध्यावे दुनिया सारी,
म्हारा अटक्या काज बनाईज्यो जी,
म्हारा प्यारा गजानन्द...||३||

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

।। श्री गणेश वन्दना ।।

दोहा : विघ्न हरण मंगल करण नाम तेरो गणराज।
भक्तों का आकर सदा आप सुधारो काज।।

(तर्ज : मेरा आपकी कृपा से...)
गणराज लाज मेरी, है हाथ में तुम्हारे,
गौरी के लाल मेरे, आकर बनो सहारे।।टेर।।

बुद्धि प्रदान करते, विघ्नों को आप हरते।
जो नाम ले तुम्हारा, भण्डार उनके भरते।
आराम से गुजर हो, जीवन में हो उजारे।।
गौरी के....।।१।।

तेरे भरोसे बैठा, तेरी राह मैं निहारूँ।
हे वक्रतुण्ड तुमको कब से खड़ा पुकारुं।
है लाज हाथ तेरे, भोलेनाथ के दुलारे।।
गौरी के...।।२।।

आकर के नाथ मेरा, हर विघ्न दूर करदो।
रिद्ध सिद्ध को साथ लाकर, आंगन खुशी से भर दो।
भक्तों का काम तुम बिन, है कौन जो सुधारे।।
गौरी के...।।३।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। गुरु वन्दना ।।

(तर्ज : ऐ मेरे दिले नादां...)

गुरुदेव दया करके, मुझको अपना लेना
मैं शरण पड़ा तेरी, चरणों में जगह देना..।।टेर।।

करुणानिधि नाम तेरा, करुणा दिखलाओ तुम,
सोये हुए भाग्यों को, हे नाथ जगाओ तुम,
मेरी नाव भँवर डोले, उसे पार लगा देना,
गुरुदेव दया करके...

तुम सुख के सागर हो, निर्धन के सहारे हो,
इस तन में समाये हो, मुझे प्राणों से प्यारे हो,
नित माला जपूँ तेरी, नहीं दिले से भुला देना,
गुरुदेव दया करके...

पापी हूँ या कपटी हूँ, जैसा भी हूँ तेरा हूँ,
घरबार छोड़ कर मैं जीवन से खेला हूँ,
दुख का मारा हूँ मैं मेरे दुखड़े मिटा देना,
गुरुदेव दया करके...

मैं सबका सेवक हूँ, तेरे चरणों का चेला हूँ,
नहीं नाथ भुलाना मुझे, इस जग में अकेला हूँ,
तेरे दर का भिखारी हूँ, मेरे दोष मिटा देना,
गुरुदेव दया करके...

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। गुरु वन्दना ।।

दोहा : जहाँ बैठाये, वही मैं बैठूं, जो पहराजे वो ही मैं पहरुँ।
मेरी उनकी, प्रीत पूरानी, बेचो तो बिक जाऊँ।।

गुरु मेरी पूजा, गुरु गोविन्द,
गुरु मेरा पारब्रह्म, गुरु भगवंत।। गुरु मेरी....

गुरु मेरा देव, अलख अभेव,
सदा में पूजूं, चरण गुरु सेव।। गुरु मेरी....

गुरु के दर्शन, देख देख जिऊ।
गुरु के चरण, धोय धोय पिऊ।। गुरु मेरी....

गुरु बिन और नहीं कोई ठाव।
सब दिन जपहुँ, सद्गुरु नाम।। गुरु मेरी....

गुरु मेरा ज्ञान, गुरु हृदय ध्यान
गुरु गोपाल, सुरत भगवान।। गुरु मेरी....

दोहा : ऐसे गुरु पे बलिहारी जाये।
आप मुक्त है, हमें भी तारे।।

गुरु की की शरण, रहूँ कर जोड़।
गुरु बिन और, नहीं कोई छोर।। गुरु मेरी....

गुरु की दया से, उतरे भवपारा,
गुरु सेवा दे, यम से छुटकारा।। गुरु मेरी....

अंधकार में, गुरु मंत्र उजाला,
गुरु के संग, सकल निस्तारा।। गुरु मेरी....

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री गुरु वन्दना ।।

मेरे भी मीत बनोना, बनोना गुरुदेव हमारे,
मेरे भी कष्ट हरो ना, हरो ना गुरुदेव हमारे।।टेर।।

अधम नीच हूँ, अति निर्बल हूँ,
बुद्धिहीन हूँ, बहुत विकल हूँ,
औगुण भरे मुझमें सारे बनोना गुरुदेव...।।१।।

नित-नित तूम मेरे सपनों में आओ,
सोये मेरे भाग्य जगाओ,
दो नैनों के तारे बनोना गुरुदेव...।।२।।

किस विधि नाथ मैं तुझको रिझाऊँ,
सेवा पूजा कर नहीं पाऊँ,
अटके है कारज सारे बनोना गुरुदेव...।।३।।

दीन दुःखी पर कृपा कर दो,
चरणों की भक्ति का वर दो,
पाप हरो मेरे सारे, बनोना गुरुदेव...।।४।।

मन मन्दिर की ज्योति जगा दो,
भटके हुए को राह दिखा दो,
काटो क्लेश मेरे सारे, बनोना गुरुदेव...।।५।।

करके भरोसा तुझ पर भारी,
शरण पड़ा है नाथ तुम्हारी,
भक्तों के रखवारे बनोना गुरुदेव...।।६।।

|| श्री गुरु वन्दना ||

(तर्ज : बहुत प्यार करते हैं...)

गुरु शरणम ममः, गुरु शरणम ममः
गुरु शरणम्
गुरुदेव सत्यम्, शिवम् सुन्दरम्

गुरु चरणों की महिमा है न्यारी
चरण-कमल में जाऊँ बलिहारी
गुरु चरणन में सुख है परम
गुरुदेव सत्यम शिवम् सुन्दरम्

गुरु चरणों की रज है पावन
गुरु मूरत भी है मनभावन
दरशन दे दो, यही वन्दनम्
गुरुदेव सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

देवों ने भी तेरा गुण गाया
श्री चरणों में शीश है झुकाया
सब बोलो धन्य है गुरु चरणम्
गुरुदेव सत्यम् शिवम् सुन्दरम्।

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||
|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

।। गुरु वन्दना ।।

(तर्ज : सपने सुहाने..)

बैठा हूँ चरणों में चित्त धर के।
गुरुदेव पधारो दया कर के।।

बिन दर्शन चैन न पाऊँ, नैनों से नीर बहाऊँ
प्रभु कब तुम आन मिलोगे, मैं कब तक आस लगाऊँ
भाग्य जगा दो हमारे घर के, गुरुदेव पधारो दया....

है अर्जी नाथ हमारी, आगे मर्जी है तुम्हारी
मेरी बिगड़ी आके बना दो, सुन लो ना टेर हमारी
देर करो ना कहूँ डर के, गुरुदेव पधारो दया....

मैं तो हूं दास तुम्हारा, मुझे तेरा एक सहारा
मैं किसको दुखड़ा सुनाऊँ, तुझ बिन न कोई हमारा
लाल रुमाल फिरा दो सिर पर, गुरुदेव पधारो दया...

तू तो भक्तों का रखवाला, दीनों का तू प्रतिपाला
अनाथों का नाथ कहावे, नित फेरूँ तुम्हारी माला
फेरो दया की नजर मुझ पे, गुरुदेव पधारो दया...

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। गुरु वन्दना ।।

(तर्ज : नैया भँवर से आकर..)

दोहा : वाणी शीतल चन्द्रमा, मुख मंडल सूर्य समान
गुरु चरणन त्रिलोक है, गुरु अमृत की खान

अभी भी समय है, गुरु को मना ले,
चरणों की धूली को, माथे लगा ले।

गुरु है कृपालु, गुरु है दयावर
ममता की मूरत, गुरु ज्ञान सागर
मन का अंधेरा, आकर हटा ले
अभी भी...

अमृत वाणी, बहे गुरु मुख से
ले लो शरण गर, रहना हो सुख से
प्रेम के सरोवर में, तू भी नहा ले
अभी भी....

सौंप दे जीवन, गुरु चरणन में
रंग लो गुरु को अपने, मन-क्रम-वचन में
नैया को कर दे अब भी, गुरु के हवाले
अभी भी....

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। गुरु वन्दना ।।

(तर्ज : उमराव धारी..)

गुरुदेव थार चरणां शीश झुकावां म्हार राज
गुरुदेव जी ओ गुरुदेव

पावन है गुरुदेवता, देव है जग में महान
भगतां के मन में बसे, भक्त-वत्सल भगवान
गुरुदेव जी ओ गुरुदेव...

जीवन नैया भगतांरी, डोल रही मझधार
कर दो ना आकर प्रभु, नैया परली पार
गुरुदेव जी ओ गुरुदेव...

पाप गठिरया लेय कर, आयो थार द्वार
सेवक अपनो जानकर, कर दिज्यो उद्धार
गुरुदेव जी ओ गुरुदेव...

॥ गुरु वन्दना ॥

(तर्ज : अभी भी समय है....)

नैया भंवर से आकर बचा ले
रो-रो बुलाऊँ तुझको सापटवाले

सुनती नहीं क्या, आवाज मेरी
दीनों के नाथ क्यूँ, करता है देरी
तू ही बता अब, कौन सम्भाले
नैया भंवर से....

दर्शन पाने की, मुझको है आशा
तेरी दया की इक, बूँद का प्यासा
चरणों से अपने, मुझको लगा ले
नैया भंवर से....

बुलाता रहूँगा तुझको, साँझ सकारे
जब तक रहेंगे तन में प्राण हमारे
आकर के बाबा, चाहे आजमाले
नैया भंवर से....

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

।। गुरु वन्दना ।।

(तर्ज : मैं जागूँ रे तू सोजा...)

गुरुदेव मेरे तू आजा, नयनों में आके समा जा।।टेर।।

लीलानन्द है नाम तेरा, वृन्दावन है धाम तेरा
स्वीकार करो लीलाधारी, चरणों में प्रणाम मेरा
अब आके दरश दिखा जा, नयनों में आके समाजा
गुरुदेर मेरे तू......

कैसे तुझको रिझाएँ प्रभु, कब पूरी होगी अभिलाषा
आकर के इतना बता दो प्रभु, भक्ति की क्या है परिभाषा
मनमीत मेरे तू आजा, नयनों में आके समाजा
गुरुदेव मेरे तू

मन मन्दिर के आसन पर, तेरी छवि ही बसाया है
भजनों के पुष्प चढ़ा करके, तेरा रुप सजाया है
हमें छोड़ के अब तू न जा, नयनों में आके समाजा
गुरुदेर मेरे तू......

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।
।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। गुरु वन्दना ।।

(तर्ज : पूर्वा सुहानी आई रे....)

कृपा तुम्हारी चाहिये गुरु कृपा
मैं तो आया तेरे द्वार, तेरी महिमा अपार
चरणों में धूनी रमाई रे, गुरु कृपा

पथ-पथ तू मेरा साथ निभाना,
दीनों के नाथ नहीं दिल से भुलाना
भटके हुए को तू रस्ता दिखाना,
मन में होवे तेरा वास, सिर पे होवे तेरा हाथ
मुझे चरणों की धूली चाहिए, गुरु कृपा

चरणों की तेरी मैं पूजा करुँगा
तन मन धन से मैं सेवा करुँगा
चरणों को धो-धो के नित मैं पियुँगा
दे दो दे दो ना वरदान थोड़ी सी भक्ति का दान
तेरी सूरत मुझे भायी रे, गुरु कृपा

दीनों के नाथ मत इतना विचारो
शरण पड़ा हूँ मुझे भी उबारो
मेरी बिगड़ी को प्रभु आन सँवारो
करता हूँ मैं तेरा ध्यान होठों पे है तेरा नाम
मुझे शरण तुम्हारी चाहिये, गुरु कृपा

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। गुरु वन्दना ।।

(तर्ज : कहीं दीप जले....)

मम नमः गुरु देवाय।
मम नमः गुरु देवाय।।

गुरु देव की महिमा न्यारी
कहे ऋषि मुनि दुनिया सारी,
यही वेद पुराण बताये, ...मम नमः

गुरुदेव देवों में निराला
वो है सबका रखवाला
भगतों की लाज बचाये, ...मम नमः

भरा ज्ञान खजाना तेरा
अज्ञान हटाना मेरा
हम तेरी आश लगाए, ...मम नमः

चारों धाम गुरु चरणन में
सारे पाप कटे दरसन में
गुरु मूरत मन को भाए, ...मम नमः

गुरु भाव भक्ति के सागर
भरदो मेरे मन की गागर
चरणों में शीश झुकाएँ, ...मम नमः

|| गुरु वन्दना ||

गुरुदेव शरण तेरी सतसंगी आये हैं,
दया की नजर फेरो ये शीश झुकाये हैं, गुरुदेव शरण ..

बिन कृपा के तेरी हम उठ ही नहीं सकते,
बिन सेवा किये तेरी हम तर भी नहीं सकते,
जो टूट गयी तारे, बन्धवाने आये हैं
गुरुदेव शरण तेरी....

है भेद भाव हम में, उसको तुम दूर करो,
इक विनती हमारी है उसको मंजूर करो,
मेटो ज्वाला तन की, बड़ी दूर से आये हैं
गुरुदेव शरण तेरी....

कर दो आशा पूरी लागी झड़ी असुँवन की
नहीं माँगे धन दौलत, धूली दो चरणन की
तज दो अवगुण सारे, ये गम के सताये है
गुरुदेव शरण तेरी....

तुम दीन दयालु हो, भक्तन हितकारी हो
फिर निष्ठुर बने हों क्यों, तुम श्याम बिहारी हो
तुझे अपना बनाने को, तेरे चरणों में आए हैं
गुरुदेव शरण तेरी....

नहीं भुलेंगे स्वामी, एहसान तुम्हारा हम
जब तक इन श्वासों में, होठों पे रहेगा दम
तेरे ही दरशन की ये आस लगाये है
गुरुदेव शरण तेरी....

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

।। श्री बाबा स्तुति ।।

लाल रुमाल तेरी जादू से भरी
जिसके सर पर घूमे उसकी विपदा टरी।।

जहाँ काम नहीं चलता है, जोर जुलुम और माल से
बाबा अपना काम निकाले, लाल रुमाल से
देखी बाबा हमने तेरी कारीगरी.... जिसके सर

दुखियों के दुख हर लेता है, लाल रुमाल से
मनवांछित फल भी देता है, लाल रुमाल से
सुनले सापट वाले अब तो बात हमारी... जिसके सर

रोतों को भी हँसा दिया है, लाल रुमाल से,
उजड़े घर को बसा दिया है, लाल रुमाल से,
चक्कर खाए दुनिया देखे जादूगरी... जिसके सर

'राज' की नैया सापट वाले, पार लगाए दे,
जादू की रुमाल का कमाल दिखाए दे,
रखले सापट वाले अब तो बात हमरी... जिसके सर

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री बाबा स्तुति ।।

ओ सुनरे सापट वाले, हम है दुखड़े के मारे,
बाबा आये तेरे द्वारे तेरी शरणन में-२
मोरी लागी ले लगन तेरे चरणन में....

मुट्ठी में तेरे दुनिया, तेरे हाथ में सबकी डोरी
और किसी की तू चलने नहीं देता चोरी सीना जोरी
छल कपट न तुझको भाये, जो भी प्रेम से बुलाये,
नंगे पाँव दौड़ा आये, घर भक्तन के ।। मोरी लागी..

गोरा घर पानी भरदी, राम धनिया की खेती करदी
और प्रेम के बन्धन में बँधकर, बलि घर दरवानी कर दी
जब सबके दुखड़े हरले, फिर मुझसे नजर क्यूँ बदले
नानी बाई रा मायरा तू हँस हँस कर के भर दे,
इक पल में बनादे, इक पल में मिटादे,
अपनी भृकुटी के बस इक शयनन में।। मोरी लागी..

है धन्य वो सापट ग्राम, करुं प्रणाम, हमारे राम
कि प्रगटे नर-तन में घनश्याम, गोकुल वाला, नंद का लाला
तुझको मेरा प्रणाम, लीलानंद तेरी लीला न्यारी,
बाबा तेरी लीला न्यारी, कहाँ बनाया धाम,
भक्त 'राज' की पुकार, मेरा बेड़ा ले सम्भाल
तेरी मोहनी मूरत बसी नयनन में ।।मोरी लागी..

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री बाबा स्तुति ।।

आधार हो इक तेरा आस इक तेरी
ऐसी कृपा मुझपे भी, हो प्रभु तेरी।।टेर।।

तेरी कृपा से स्वामी मुझे ये लगन लगी है
सत्यथ की राह टेढ़ी, मची मन में खलबली है
मिट जाये सब अन्धेरा, मिल जाए रहा तेरी।।

हँसने लगे ये दुनिया, तेरा प्यार इस कदर हो
दुनिया की हरकतों का, अब मुझपे ना असर हो
ढूँढू सदा मे तुझको, कर आँखे बन्द मेरी।।

करु निज करम जगत में, लेकर के नाम तेरा
दिल में हो याद तेरी, मन में हो ध्यान तेरा
समझुँ तेरे इशारे, बाते हो तुम से मेरी।।

इतना करीब करलो, बस तुम ही तुम ही तुम हो
तेरे नाम से शुरु हो, तेर नाम पे खतम हो
ये सिलसिला ना टूटे, हो जाये जीत तेरी।।

तेरा नाम लेके सोऊँ, तेरा नाम लेके जागूँ
सपनों में पागलबाबा, झाँकी तुम्हारी पाऊँ
होगा सफल ये नरतन, पाकर के प्रीत तेरी।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : ये रेशमी जुल्फें...)

चाहे मुझे जितनी बाबा सजा देना
पर ना कहना भगत मैं तुम्हारा नहीं
विनती मेरी सुन ले ओ लीलानन्द बाबा
बिन तेरे नाथ मेरा गुजारा नहीं

सारे जगत का तू दाता कहाये
फिर क्यूं भगत तेरा नैना बहाये
भरता सबकी झोली बाबा, मुझको क्यूँ तरसाये तू
पार तो करता नईया सबकी, मुझको क्यूँ बिसराये तू
क्या मैं लगता प्रभु, तुझको प्यारा नहीं......

नन्हा सा मुझको इक फूल बना लो
दया में पिरो कर अपने गले से लगा लो
तेरे गले से लग कर बाबा, हर पल ही मुस्काऊँ मैं
हृदय के तारों से बाबा, यही संगीत सुनाऊँ मैं
तेरे होते हुए मैं, बेसहारा नहीं.....

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

|| श्री बाबा स्तुति ||

मेरे बाबा अगर मुझको दरश, देते तो क्या होता,
तेरे चरणों की सेवा में लगा लेते तो क्या होता,

फँसी मझधार में नैया, ना सूझे अब किनारा है
भरोसा तेरा है भारी, अब तू ही खेवन हारा है
मेरी नैया को भव से पार लगा देते तो क्या होता
मेरे बाबा अगर मुझको....

मैं हूँ पापी पतित हूँ मैं, मुझे माया ने घेरा है
किधर जाऊँ बता मुझको, मेरे मन में अंधेरा है
अंधेरे को उजालो में, बना देते तो क्या होता
मेरे बाबा अगर मुझको...

तू सुख का एक सागर है, तेरी एक बूँद को तरसे हम
ना भूलों मुझको ओ बाबा, मेरे नैनों से बरसे गम
मेरे गम को खुशियों में बदल देते तो क्या होता
मेरे बाबा अगर मुझको...

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : थाली भर के ल्यायी)

दीनाबंधु करुणा सिंधु, बाबा थारो नाम हो,
दीन दुखी पर किरपा करणो, बाबा थारो काम हो।।टेर।।

बाबा थे हो लीलाधारी, महिमा थारी न्यारी है,
'जय राधे गोविन्दो' की बोली, लागै थानै प्यारी है,
चंदन को श्रृंगार करो थे, सापट थारो धाम है।।
दीन दुखी पर किरपा करनो...।।१।।

भीड़ लगै दरबार में थारे, आव नर और नारी रे,
दर्शन थारा पाकर बाबा होव भव जल पारी रे,
पहरावां फूलां री माला, थानै कर प्रणाम हो।।
दीन दुखी पर किरपा करनो...।।२।।

नैया म्हारी डूबी जाय, थे ही पार लगावोला,
थामल्यो पतवार म्हारी, क्यू इतना तरसावोला,
बाबा थारो नाम पुकारा, निशदिन सुबह और शाम हो,
दीन दुखी पर किरपा करनो।।२।।

लाल रुमाल घुमा कर सर पे, दुखड़ा म्हारा हर ल्यो थे,
आशा लगाकर बैठ्या बाबा, अबकी म्हारी खबर ल्यो थे,
थारी शरण में आके दाता, म्हें करा कीर्तन नाम हो।।
दीन दुखी पर किरपा करनो...।।३।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : गाड़ी वाले मुझे बिठाले...)

लीलानंद तेरी लीला न्यारी, धर मेरे सिर पे रुमाल,
द्वार तेरे आऊँगा
आऊँगा मैं आऊँगा, दूध कटोरा लाऊँगा,
मिसरी घोल के तुझे पिलाऊँ, कर दे मुझे निहाल
द्वार तेरे आऊँगा।।टेर।।

सुनता हूँ दातारी है, और भोला भण्डारी है,
कोई तुमको कृष्ण कहे, चक्रसुदर्शन धारी है,
तू हैं भगतों का रखवाला, मेट दे सब जंजाल
द्वार तेरे आऊँगा....।।१।।

बिगड़ी सब की बनाता तू, गिरते को भी उठाता तू,
एक नजर सबको देखे, भेद भाव नहीं लाता तू,
शरण पड़े की लज्जा राखो, करदो मुझे खुशहाल
द्वार तेरे आऊँगा।।२।।

तूने मन को लुभाया है, नैनो में तू समाया है,
डरते डरते ही मैने, अपना दुखड़ा सुनाया है,
अर्जी मेरी मर्जी तेरी, मत कर इतना विचार
द्वार तेरे आऊँगा।।३।।

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : दल बादलीरो....)

था बिण नैया भव स पार, बाबा कुण तो करे।।टेर।।

कद स चढ़्यो ह मन मे, चाव घणो भारी,
करां अरदास थांसू, सुणो लीलाधारी,
आय पधारो इक बार, था बिण नैया.....।।१।।

ना जाणूं म भक्ति, पूजा कोनी आवै,
सोच-सोच म्हारा नैण भर आवै,
सुणलो ना करुण पुकार, था बिण नैया.....।।२।।

चरणां सूं बाबा थार, प्रीत लगाई,
कद तू करेलो बाबा, म्हारी सुणवाई,
रख माथ पे लाल रुमाल, था बिण नैया.....।।३।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : उड़े जब जब जुल्फे तेरी..)

क्यूँ हार बसंती पहरायो
तेरो चम-चम चमके चेहरो,
नजर लग जावेगी-२, लीलाधारी।।टेर।।

है धाम वृन्दावन थारो,
दरबार लाग्यो है न्यारो - ओ जी ओ,
नजर लग जावेगी - लीलाधारी।।१।।

संग राधा गोविन्द राजे,
जाकी वंशी प्यारी बाजे - ओ जी ओ,
नजर लग जावेगी - लीलाधारी।।२।।

कोई श्याम कलेवर थारो,
जा पर सोहे चन्दन न्यारो,
नजर लग जावेगी - लीलाधारी।।३।।

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : ऐसा प्यार बहादे..)

अब तो अर्जी सुन लो बाबा,
हर पल ध्यान लगाऊँ मैं।।टेर।।

भक्त जनों का स्वामी बाबा, भक्त वत्सल कहलाये तू,
निर्मल पावन श्याम कलेवर, इन नयनों को भाये तू,
मुझको राह दिखा दो बाबा, भटक ना पथ से जाऊँ मैं।।१।।

मेरे इस अंधियारे मन में, करो प्रकाश तुम्हारा है,
पग-पग पर होता है मुझको, बस आभास तुम्हारा है,
करो दया मुझ पर भी ऐसी, तुझमें घुल मिल जाऊँ मैं।।२।।

थक गया मैं हार गया हूँ, आया हूँ तेरी शरणन में,
आशा पूरी करनी मेरी, लाया हूँ तेरे चरणन में,
हँस उड़े तब नाम तुम्हारा, गाता-गाता जाऊँ मैं।।३।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री बाबा स्तुति ।।

दरबार अनोखा, सरकार अनोखी,
सापटवाले की, हर बात अनोखी।।टेर।।

जब भी आता हूँ, दरबार में इनके,
मैं खो जाता हूँ, श्रृंगार में इनके,
नित नई नवेली, मुस्कान है इनकी।।१।।

जादूगर ऐसा, इस कदर लुभा ले,
बातें क्या दिल की, ये दिल ही चुरा ले,
कुछ होश नहीं है, मुझको तन मन की।।२।।

विपदाओं से दिल क्यूँ यूँ घबराये,
ले नाम प्रभु का, प्रभु पार लगाये,
करते रखवाली, अपने प्रेमी की।।३।।

यहाँ मन की मुरादें, पाते हुए देखा,
देखी है बदलती, किस्मत की रेखा,
भक्तों फैली है, चहूँ सत्ता इनकी।।४।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : अखियों के झरोखे)

अखियों में नमी सी हो, दिल बैठा हो हार के,
जब कुछ न नजर आये, मूझे तु ही नजर आये,
जब गम के अंधेरे हो, बन्द हो सारे रास्ते।
मुझे कुछ न नजर आये, बस तु ही नजर आये।।टेर।।

एक तू ही मेरी आस है, एक तू ही सहारा,
तेरे नाम से बाबा मेरा, चलता है गुजारा
एक तेरे भरोसे पर, सब बैठा हूँ हार के,
उलझन मेरे जीवन की, एक तु ही तो सुलझाये।।

इस जग में प्रभु आप सा दानी नहीं है,
तेरे प्रेमीयों के प्रेम का, कोई सानी नहीं है
कोई प्रेमी तेरा मुझको, जब देखके मुस्कायें
मूझे तु ही नजर आये, बस तु ही नजर आये।।

कभी सोचता है दिल मेरा, तुने क्या-२ दिया है,
जिस चीज के लायक नहीं, तुने वो भी दिया है,
तु ऐसा दयालु है, छुले, पत्थर जो प्यार से,
फूल उसमें भी खिल जाये, फूल उसमें भी खिल जाय।।

सोनु को मिले उम्र भर, चरणों में ठिकाना,
तेरे नाम से जाने मुझे,ये सारा जमाना
तेरी सेवा में लीलानन्द, जीवन ये गुजर जाये,
मूझे कुछ न नजर आये, बस तु ही नजर आये।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : आओ जी आओ..)

आओ जी आओ म्हारा लीलानंद बाबा
भगत बुलाव थान आनो पड़सी
कीर्त्तन में आज थान आनो पड़सी

महिमा थारी जग से न्यारी बाबा, साँवली सूरत प्यारी जी,
दरश दिखा दे आकर बाबा, अखियाँ तरसे म्हारी जी-२,
हाथ दया को बाबा, रख दे तू सर पर,
भगतां ने दरश दिखानो पड़सी,

आओ जी आओ....

चरण कमल में शीश नवाऊँ, थारी ही ध्यान लगाऊँ जी,
हे कृपालु, दीन दयालु, गीत मैं थारां गाऊँ जी-२,
भर्‍या भंडार बाबा, थारी दया का,
आज खजानो लुटानो पड़सी,

आओ जी आओ....

चंदन को थारे तिलक है सोहे, गल तुलसा री माला जी,
लाल रुमाल घुमाद्यो सर पे, बाबा सापटवाला जी-२,
बीच भंवर में अटकी है नैया,
अटकी ने पार लगानी पड़सी

आओ जी आओ....

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।
।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

॥ श्री बाबा स्तुति ॥

(तर्ज : चिट्ठी आई है..)

ले कर में लाल रुमाल, गले में तुलसी माल
बाबो आयो है, आयो है, बाबो आयो है-२
मन हरषायो है-२

थारी महिमा गांवा बाबा, दर्शन दिज्यो आज
वृन्दावन से आप पधारो, लीलानंद महाराज
दरश दिखाओ इक बार, हो जावे बेड़ा पार
बाबो आयो है....

रुप है थारो जग से न्यारो, चंदन रो श्रृंगार
पीताम्बर थारे तन पे बिराजे, महक रह्यो दरबार
म्हें हा थारी संतान, थे दिज्यो थोड़ो ध्यान
बाबा आयो है....

भूल्योड़ा भगतां ने बाबा, क्यूँ इतनो तरसावे
आकर म्हाने गले लगा ले, यादड़ली सतावे
राधा गोविन्द ले साथ, रख ले तू म्हारी बात
बाबा आयो है....

|| श्री बाबा स्तुति ||

(तर्ज : जहाँ डाल डाल पर....)

श्री वृन्दावन में वास करे, दीनों का दीन दयाला
वो है बाबा सापटवाला
जो दूर करे संकट सबका, कोई बन करके रखवाला
वो है बाबा सापटवाला

तेरे तन पे सोहे पीताम्बर, लीलानन्द नाम है प्यारा
तेरी महिमा सुन-सुन के दर पे, कोई आता है जग सारा-२
जो हरे कृष्ण हरे राम की धुन में, रहे सदा मतवाला
वो है बाबा सापटवाला-२

इस जग में सुर-नर ऋषि-मुनि, जपते गुरु नाम की माला
गुरुदेव के चरणों में रहते, पीते हरी नाम का प्याला-२
जिसके मन में नहीं भेद-भाव और गल में तुलसी माला
वो है बाबा सापटवाला-२

भक्तों की पीड़ा सुन करके, तू दौड़ा-दौड़ा आये
सुध-बुध खोकर 'पागल' होकर, भक्तों को हिवड़े लगाये-२
विपदा सब दूर करे पल में और लाल रुमाली वाला
वो है बाबा सपाटवाला-२

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : तेरी दुनिया से दूर....)

जपूँ बाबा तेरा नाम
तूझे कोटि प्रणाम, है स्वीकार करना

माया के अँधेरे में भटक रहे हैं, अब जायें तो कहाँ
स्वारथ की अखियों से ढूँढ़ रहें, तुझे पाये तो कहाँ-३
बना लो मन मन्दिर में धाम
जैसे तेरा सापटग्राम है
.....स्वीकार करना

दीनों का सहारा, सुनी है बाबा तेरी कि महिमा है बड़ी
बाबा हम हैं मूरख और ज्ञा्न का तू ही तो पारसमणि-३
पुकारुँ तुझे सुबह-शाम
ध्यान तेरा अविराम है
.....स्वीकार करना

कुछ भी नहीं मेरा, ये सब कुछ ही तो तेरा, कोई कहता ही नहीं
जब तन भी नहीं अपना फिर तेरा मेरा कहते, कोई थकता ही नहीं-३
दे दो चरणों में विश्राम
हमें इतना ही काम है
.....स्वीकार करना

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

|| श्री बाबा स्तुति ||

(तर्ज : सनम तू बेवफा....)

करो कृपा ये आँगन आज, सापट ग्राम हो जाये
दे दो वरदान मेरा मन, वृन्दावन धाम हो जाये

मैं बन के तुलसी की माला, लिपट जाऊँ तेरे गल से
अगर बन जाऊँ पीताम्बर, रहूँ तेरे पास हर पल में
जो मानो तुम यही विनती, तो मेरा काम हो जाये।
दे दो वरदान....

सजा लो मुझको माथे पर, समझ कर तन मेरा चंदन
है आशा इक यही मेरी, तो सुन लो नाथ ये वंदन
कि इससे पहले जीवन की, प्रभु ना शाम हो जाये
दे दो वरदान....

बना लो लाल रुमाल मुझे, रहूँ बाबा तेरे कर में
ऐसे बस जाओ हृदय में, जैसे बजरंग के उर में
हो जाऊँ मैं सेवक तेरा, तू मेरा राम हो जाये
दे दो वरदान....

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

|| श्री बाबा स्तुति ||

(तर्ज : चाँद आहें भरेगा....)

दर पे तेरे है आई, भीड़ भक्तों की भारी
अब तो दर्शन दिखा दो, तरसे अँखियाँ हमारी

लीलानन्द नाम तेरा, ब्रज में है धाम तेरा
चरण कमलों में तेरे, नाथ दे दो बसेरा
सुन लो करुणा के सागर, अरज यही इक हमारी
अब तो दर्शन दिखा दो, तरसे अँखियाँ हमारी
दर पे तेरे.....

गल में तुलसी की माला, पीताम्बर तन पे आला
पिला दे हमको बाबा, नाम कीर्तन का प्याला
बैठे पलके बिछायें, मन में आशा है भारी
अब तो दर्शन दिखा दो, तरसे अँखियाँ हमारी
दर पे तेरे....

कर में तेरे है बाबा, बिराजे लाल रुमाली
रख दो सिर पे हमारे, निराली जादू वाली
रंग लो अपने ही रंग में, भक्तों के तुम हितकारी
अब तो दर्शन दिखा दो, तरसे अँखियाँ हमारी
दर पे तेरे....

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : हमें और जीने की....)

द्वार पे आये हैं शरण में तुम्हारी
ओ लीलाधारी, ओ लीलाधारी

दे दो दयालु, दान दया का
कर दो सहारा, तेरी कृपा का
दीन दुखी के तुम हितकारी
ओ लीलाधारी.....

नैना हमारे बरस रहे हैं
दर्शन को तेरे तरस रहे हैं
आकर बुझादो प्यास हमारी
ओ लीलाधारी.....

तुम्हें क्या बतायें कि तुम मेरे क्या हो
तुम्हीं मेरे भ्राता, माता-पिता हो
चरणों में तेरे हम, जाएँ बलिहारी
ओ लीलाधारी.....

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

|| श्री बाबा स्तुति ||

(तर्ज : आने से उसके....)

जग से निराला है तेरा द्वार
भक्तजनों से है तुझको प्यार
दरश दिखाओ ना, मेरे लीलाधारी-२

तन पे पीताम्बर सोहे, तेरे गल में है तुलसी की माला
जो भी ध्यान लगाए मन से, झट आता है सापटवाला
नाम तेरा, गाएँ हम
चरणों से लगा लो ना, मेरे लीलाधारी

तुझसा नहीं है कोई, बाबा मेरा है श्याम सलोना
कहीं भूल भटक न जायें, कर दो ऐसा प्रभू जादू टोना
आते रहे, द्वार तेरे
गले से लगा लो ना, मेरे लीलाधारी

छाया हो घोर अंधेरा, चाहे मावस की रात हो काली
पल में हो जाये उजाला, जब माथै हो लाल रुमाली
तेरी दया, तेरी कृपा
अब बरसाओ ना, मेरे लीलाधारी

|| श्री बाबा स्तुति ||

(तर्ज : मैं कहीं कवि....)

बिगड़ी मेरी बना दे, बिगड़ी बनाने वाले

चरणों में तेरे बाबा, हम शीश है झुकाते
तेरे द्वार पे हम आकर, तुझे दुखड़ा हैं सुनाते
सुन लो पुकार मेरी, दुनिया बनाने वाले
बिगड़ी मेरी बना दे.....

है आस दिल में मेरे, कब होंगे तेरे दर्शन
बेचैन हो रहा हूँ, नयनों मे मेरे सावन
अपनी झलक दिखा दे, सपनों मे आने वाले
बिगड़ी मेरी बना दे....

मझधार मे है नैया, तू ही मेरा खिवैया
लहरों में डूब रही है, तेरे दास की ये नैया
आकर लगा किनारे, नैया चलाने वाले
बिगड़ी मेरी बना दे.....

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

|| श्री बाबा स्तुति ||

कौन सुणैलो, किने सुणाऊँ
थारे बिन पीड़ा मेरी, किने बताऊँ

बीच भँवर में डोले नैया
आ जाओ बाबा, बनकर खिवैया
बिन केवट कईयां, पार मैं जाऊँ
कौन सुणैलो....

चारों तरफ बाबा, छायी अँधियारी
रो-रो बुलाऊँ बाबा, आजा लीलाधारी
दरश दिखा दे बाबा, मैं तर जाऊँ
कौन सुणैलो....

दुनिया दिवानी मेरी हाँसी उड़ावे
थारे बिना कुण बाबा, हिवड़े लगावे
तेरो दर छोड़ बाबा, किस दर जाऊँ
कौन सुणैलो.....

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : जादूगर सईयाँ...)

डगमग डोले, खाये हिचकोले
नैया पड़ी मझधार, पार लगाओ ना

सापटवाले लीलाधारी, लीला तेरी न्यारी
वृन्दावन में वास करें, जहाँ रहते कृष्ण मुरारी
ओ नैया के खेवनहार, पार लगाओ ना
डगमग डोले....

कर में तेरे लाला रुमाली, संकट सबका काटे
भेदभाव नहीं जाने बाबा, दुःख-सुख सबके बाँटे
तेरी महिमा अपरम्पार, पार लगाओ ना
डगमग डोले....

श्याम सलोना रुप तुम्हारा, भक्तों का मन मोहे
तन पीताम्बर गल में तेरे, तुलसी माला सोहे
अब रख दो सिर पर हाथ, पार लगाओ ना
डगमग डोले

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

|| श्री बाबा स्तुति ||

(तर्ज : एक तेरा साथ....)

बाबा थार द्वार, आया भगत अपार है
कोई पायो नहीं पार है
उत्सव की छायी, कोई अजब बहार है
थारो आयो परिवार है, बाबा थार द्वार....

लीला तेरी न्यारी, थे हो लीलाधारी, 'पागल' थारो नाम है
है सापटवालो तू, भगतां रो रखवालो, वृन्दावन धाम है
भगतां रो करतार, थारो साँचो दरबार है
कोई पायो नहीं पार है, बाबा थार द्वार....

तन पे पीताम्बर है, गल तुलसी की माला, लागे म्हाने प्यारी है
कर लाल रुमाली है, सोहे तेरे बाबा, जो संकट हारी है
श्याम सलोनो रुप, थार चंदन रो श्रृंगार है
कोई पायो नहीं पार है, बाबा थार द्वार ....

बरस रह्यो अमृत, कोई आज अम्बर से, घणो आनंद छायो है
विनती करा थांसू, ओ लीलानन्द बाबा, थारो उत्सव आयो है
वेगा सा आओ, बाबा लेकर के अवतार है
कोई पायो नहीं पार है, बाबा थार द्वार.....

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : छुप गया कोई रे....)

बाबा तेरे नाम का, बना मैं दिवाना
ताने मारे पागल चाहे, कहे ये जमाना

चिन्ता नहीं है मुझको, सुनता चलूँगा
पड़े चाहे विपदा भारी, पीछे न हटूँगा
नाम भुला के तेरा, कष्ट न पाना
ताने मारे.....

तेरा ही सहारा मुझको, तेरा ही भरोसा
जीवन मरण भी मैंने, तुझको है सौंपा
तुझे मात-पिता सच्चा, बन्धु है जाना
ताने मारे....

ठाकुर लीलानन्द नाम, पाया न जहान में
रुप सलोना देखा, वार बैठा प्राण में
तेरा ही दिवाना मैं तो, तेरा ही दिवाना
ताने मारे.....

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।
।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

|| श्री बाबा स्तुति ||

(तर्ज : दुनिया बनाने वाले....)

बाबा ओ सापटवाले, याद है तेरी सताई, द्वारे
भगतों की टोली है आई, द्वार भगतों की....

सारे जगत से बाबा है न्यारा, महिमा निराली तेरी, साँचा है द्वारा
शरण पड़े को तू अपनाये, देता है बाबा सबको सहारा
जब भी भँवर में नैया, भगतों की है डगमगाई, तूने
आकर के पार लगाई, तूने आकर के पार लगाई
बाबा हो सापटवाले...

तन पे पीताम्बर तेरे, ओ लीलाधारी,
चरण कमल में जाऊँ मैं वारी
साँवली सूरत, मोहिनी मूरत, लगती है सारे भगतों को प्यारी
हृदय से जिसने भी, तेरी पुकार लगाई, तुने
उसकी है लाज बचाई, तूने उसकी है लाज बचाई
बाबा हो सापटवाले....

विनती है बाबा तुमसे हमारी, दर्शन पाने की आशा है भारी
तू ही तो है मेरे नयनों का तारा, आओ अब आ जाओ लीलाधारी
भगतों ने चरणों से, तेरे है प्रीत लगाई,
तेरी छवि है मन में बसाई, तेरी छवि है मन में बसाई
बाबा हो सापटवाले....

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

|| श्री बाबा स्तुति ||

(तर्ज : अम्बे कहो या माँ काली....)

बाबा कहूँ या लीलाधारी, आये शरण में तुम्हारी
करके कृपा तुम पधारो, स्वागत - स्वागत गाये नर-नारी

तन पे पीताम्बर तेरे, गल में तुलसी की माला
नाम संकीर्तन की धुन में रहता सदा मतवाला
चरणों से अपने लगा लो, विनती यही है हमारी
करके कृपा तुम....

साँवली सूरत तुम्हारी, कर में है लाल रुमाली
अपनी दया से भर दो, भक्तों की झोली ये खाली
आकर के दरशन दिखा दो, विनती यही है हमारी
करके कृपा तुम....

चरणों में शीश झुकाएँ, तेरा ही ध्यान लगाएँ
चरणों की पावन रज को, माथे पे हम हैं लगाएँ
चरणों की भक्ति दे दो विनती यही है हमारी
करके कृपा तुम....

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||
|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : बड़ो देर भई नंदलाल....)

है दीनों का रखवाला, मेरा बाबा सापटवाला
नैन दरश को तरसे आजा, लाला रुमाली वाला रे
है दीनों का रखवाला....

लीलानन्द है नाम तुम्हारो, वृन्दावन में वास करे
भक्त तुम्हारे द्वार पे आकर, चरणों में अरदास करे
देर करो ना, जल्दी आओ
पहन पीताम्बर आला रे
है दीनों का रखवाला....

जग में कोई नहीं है हमारा, तेरा एक सहारा है
भोले भाले भगतों को बाबा तू प्राणों से प्यारा है
प्यासे भगतों को तू पिला दें
नाम की तेरी हाला रे
है दीनों का रखवाला....

गले में विराजे, तुलसी माला, महिमा तेरी न्यारी है
भक्तों का दुःख दूर करे, बाबा तू ही तो लीलाधारी है
अजब है रुप निराला तेरा
मन उजला तन काला रे
है दीनों का रखवाला...

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री बाबा स्तुति ।।

बाबा कैयां थाने रिझाऊँ
ना जानूँ मैं आरती पूजा, कैया ध्यान लगाऊँ

भोला-भाला जान के म्हाने, मत दिज्यो बिसराय
टाबर अपनो जान के बाबा, लीज्यो हिवड़े लगाय
थारे बिन मनड़ री बातां, किणन जाए सुनाऊँ
बाबा कैंया....

जगमग ज्योत जगे दिवलय की, नौबत बाजे द्वार
दर्शन करने दूर-दूर से, आवे भगत अपार
मेहर करो मेरे पे बाबा, दर्शन करने आऊँ
बाबा कैंया....

थारे कमी नहीं कोई भी, भर्‍या पड्या भण्डार
इ दुनिया में थारे जैसो, ना कोई दातार
आवे नहीं समझ में मेरे, के तेरे भेंट चढ़ाऊँ
बाबा कैंया....

थारे से कोई बात छुपी ना सबकै मन की जाणो
मैं सब हाँ बाबा टाबर थारा, मानो या ना मानो
जद आवे यादड़ली थारी, आँसूड़ा ढ़लकाऊँ
बाबा कैंया....

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

॥ श्री बाबा स्तुति ॥

(तर्ज : कव्वाली....)

भक्त आये शरण में तुम्हारी
दरश तुमको दिखाना पड़ेगा
तेरा भक्तो से जन्मों का रिश्ता
आज तुझको निभाना पड़ेगा
भक्त आये शरण.....

दीनाबन्धु कहाते हो बाबा
क्यूँ हमको सताते हो बाबा
तेरी ही दया का खजाना
भगतों में लुटाना पड़ेगा
भक्त आये शरण.....

तूने बिगड़ी है सबकी सँवारी
चाहे राजा हो या रंक भिखारी
हम भी आश लगाएँ तुम्हारी
गले हमको लगाना पड़ेगा
भक्त आये शरण.....

बिगड़ी भक्तों की आकर बनाए
नहीं पल भर भी देर लगाए
जादू वाली ये लाल रुमाली
आज सर पे घुमाना पड़ेगा
भक्त आये शरण.....

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

|| श्री बाबा स्तुति ||

बाबा मेरे सिर पे हाथ धरो

कामी अधमी तारनहारे
मेरी अरज सुनो
समदरशी है नाम तिहारो
मेरे पाप हरो
बाबा मेरे.....

बीच भँवर में बाबा मेरी
डगमग डोले नैया
मल्लाह बनकर आओ बाबा
नैया पार करो
बाबा मेरे.....

राजा हो या निर्धन चाहे
तू ही सबका दाता
वृन्दावन से आओ बाबा
मेरी झोली भरो
बाबा मेरे.....

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

|| श्री बाबा स्तुति ||

जो मैं होता लीलानन्द, मोर तेरे बागों का
तेरे आँगन बीच मैं आता
तुझे नच-नच के दिखलाता
तेरे हर पल दर्शन पाता-पाता

जो मैं होता लीलान्द, मोती तेरी माला का
तलसी माला मैं बन जाता
तेरे अंग-संग मुस्काता
तेरे हर पल दर्शन पाता-पाता

जो मैं होता लीलानन्द, तेरी लाल रुमाली
तेरे हाथों में मैं रहता
संकट सबके मैं हर लेता
तेर हरपल दर्शन पाता-पाता

जो मैं होता लीलानन्द, पत्थर तेरे मन्दिर का
चरणन भगतों के लग जाता
चंचल मन निर्मल हो जाता
तेरे हर पल दर्शन पाता - पाता

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||
|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : लौट के आजा मेरे मीत....)

आ लौट के आजा बाबा, तुझे तेरे भक्त बुलाते हैं
तुझे रो-रो पुकारे मेरे नैन, मुझे मिलता नहीं है बाबा चैन
तुझे तेरे भक्त बुलाते हैं...

रुठ गए क्यूँ हमसे ओ बाबा, ऐसी क्या भूल हमारी
तरस रहे हैं दरशन को तेरे, जाए ना याद तुम्हारी
तेरी याद सताए दिन-रात, तुझे तेरे....

जब जब भी विपदा आन पड़ी है, तूने ही धीर बंधाया
जबसे तुम भी बिछड़ गए हो, कोई न गले लगाया
क्यूँ हो गए अर्न्तध्यान, तुझे तेरे....

दीनों की सेवा में तूने, खुद को किया है अर्पण
ब्रज भूमि की पावन रज में, तन को किया समर्पण
लिए नैनों में अँसुवन धार, तुझे तेरे....

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : कव्वाली)

मेरे बाबा हम भक्तों की नैया, पार तुमको लगानी पड़ेगी,
नैया के खिवैया तुम्हीं हो, अब तो पतवार उठानी पड़ेगी।।

बड़ी आशाएँ लेकर के मन में
हम आएँ हैं दर पे तुम्हारे
लाज भक्तों की ऐ मेरे बाबा
आज तुमको बचानी पड़ेगी.. नैया के...

दीनानाथ दया के हो सागर
बड़ा जग में है नाम तुम्हारा
हम दीनों पे ऐ मेरे बाबा
दया तुमको दिखानी पड़ेगी..नैया के...

जान कर भी तुम अनजान बनकर
क्यूं चुपचाचप बैठे हो बाबा
अन्तर्यामी हो घट-घट की जानों
क्या पिर भी बतानी पड़ेगी..नैया के...

तेरे दर से कोई भी सवाली
लौट कर के गया ना वो खाली
यही सुनकर ये बालक भी आया
मेरी बिगड़ी बनानी पड़ेगी..नैया के...

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : आ जाओ तड़पते है...)

आ जाओ मेरा लीलाधारी मैं तेरा ध्यान लगाता हूँ
लीलानन्द कहूँ या कृष्ण कहूँ, कुछ समझ नहीं मैं पाया हूँ।

कभी मथुरा में अवतार लिया, अब सापट तेरा धाम बना
कभी कहलाये तुम नन्दलाला, अब 'पागल' तेरा नाम बना
राधा के तुम हो सांवरिया, तेरे चरणों में चित लाया हूँ
आ जाओ मेरे लीलाधारी....

तू बदन पे ओढ़े पीताम्बर, वो ओढ़े कमलिया काली है,
उसके हाथों में बांसुरिया, तेरे हाथों में लाल रुमाली है,
तुम चक्रसुदर्शन धारी हो, तेरी पार नहीं मैं पाया हूँ।
आ जाओ मेरे लीलाधारी....

हे ब्रजवासी हे अविनासी, अब काट देवो यम की फाँसी
जो अब भी तुम नहीं आओगे, होगी जग में तेरी हाँसी
नैया को पार लगा देना, तुझको ही अपना पाया हूँ
आ जाओ मेरे लीलाधारी....

जब जब भी भीड़ पड़ी हम पर, तुम दौड़े दौड़े आये हो
जो तेरी शरण में आया है, तुम हृदय अपने लगाये हो
मुझको भी शरण ले लो दाता, संग बाबा मण्डल आया हूँ
आ जाओ मेरे लीलाधारी....

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

|| श्री बाबा स्तुति ||

(तर्ज : बचपन की...)

लीलानन्द भजो प्यारे, यही नंद का लाला है
मत भटको इधर-उधर, यही जग रखवाला है।

है नैन रसीले भी, गल तुलसी की माला है
माथे पे तिलक सोहे, रंग रुप का काला है
श्रृंगार बसन्ती है, तन ओढ़े दुशाला है...
मत भटको..

जमुना के किनारे पर, ये रास रचाता है
ग्वालों को संग लकेर, ये धेनु चराता है
माखन का चुरैया ये, भक्तों का प्यारा है
मत भटको...

मधुवन में जाकर के, ये बेनु बजाता है
इक तान सुरीली पर, सखियों को बुलाता है,
है नन्द दुलारा ये, राधा का भी प्यारा है,
मत भटको...

आया जो भी दर इसके, ये उसे अपनाया है,
एक लाल-रुमाल से, सबका दुख टाला है
है भाव का भूखा ये, नैनों का सितारा है
मत भटको....

|| श्री बाबा स्तुति ||

तेरी जादू की रुमलिया घुमादे सर पे,
घुमादे सर पे तू घुमादे सर पे
तेरी जादू की....

कालीचरणजी पिता तुम्हारे अन्नपूर्णाजी माता
अर्धांगिनी मात सुदेवी, आप ही जग एक विधाता
काका बाबू के तुम भईया, घुमादे सर पे....

सापट ग्राम में जाकर बाबा कुटिया एक बनाये
हरे कृष्ण हरे राम का मंतर, सबको तुम बतलाये,
आये शरण में दादु मईया घुमादे सर पे...

सापट ग्राम से चले हैं बाबा, लेके गुरुजी संग में,
बना है आश्रम बड़झाड़, आसाम जिला दरंग में
सब की नैया के खिवैया, घुमादे सर पे...

श्री वृन्दावन जाकर बाबा, लीलाकुंज बसाया,
भूतों की बस्ती को तुमने, देव का लोक बनाया
नित रास करे मंडलियाँ घुमादे सरे पे...

मकराने का बना है मंदिर, शशि देखे शरमाये,
नौ मंजिल के रथ पर तुने चारों धाम दिखाये
रक्षा करती दुर्गा मईया, घुमादे सर पे...

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : मारवाड़ी धमाल...)

ओ हो सापट वाले न म्हें आज पहराबां गजरो,
सापट वाला न....

यो अलबेलो गजरो बाबा लेकर म्हें तो आया रे,
जूही बेला मोगरा गूंथ हार बनाया रे,
सापट वाला न...

गल तुलसी की माला थारै, मस्तक तिलक निरालो रे
नाम है ठाकुर लीलानन्द रंग रुप को कालो रे
सापट वाला न...

आज मनावाँ उत्सव थारो, मनड़ो म्हारो हर्ष रे
महँक रयो दरबार थारो, कोई आनन्द बरस रे
सापट वाला न...

कई दिनां स आश लगाया, बाबा म्हारा आसी रे
थार ताईं यो गजरो बनाया ओ ब्रजवासी रे
सापट वाला न...

थारी शरण में लेल्यो बाबा मत ना वार लगाओ रे
लीलानन्द बाबा भक्तां की आश पुराओ रे
सापट वाला न...

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

|| श्री बाबा स्तुति ||

भोला भाला, भोला भाला, मेरा बाबा सापट वाला
दुख में रहता सदा सहाई, लाल रुमाली वाला
भोला भाला.....

लीलानन्द है नाम तुम्हारो, जग कहे सापट वाला
कोई कहे तोहे लीलाधारी, मैं कहूँ नन्द का लाला रे लाला
भोला भाला....

श्याम रुप तेरा मन को मोहे, चन्दन तिलक है प्यारा,
पीताम्बर तेरे तन पे सौहे, गल तुलसी की माला रे माला,
भोला भाला....

जो भी तेरे दर पे आये, उसका तू मान बढ़ाये,
सबको कहे मैं हूँ छोटा सा, 'पागोल छेले' काला रे काला
भोला भाला....

लाल रुमाल की महिमा सुन, होता विस्मित जग सारा
दौड़े दौड़े दर पर आते, पर तू भोला भाला रे भाला
भोला भाला....

जीवन नैया डगमग डोले, कोई नहीं है खिवैया
हम भक्तों को भी तुम ले लो, शरण में दीन दयाला रे दयाला
भोला भाला....

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

|| श्री बाबा स्तुति ||

(तर्ज : हे पवन पुत्र...)

हे लीलानन्द महाराज, हम शरण में तेरी आये है
हे लीलानन्द महाराज...

खूब सजा दरबार तुम्हारा, लीला तेरी न्यारी
राधा गोविन्द संग में तेरे, भक्तों की भीड़ है भारी
सब धरते तुम्हारा ध्यान, हम शरण में तेरी आये हैं
हे लीलानन्द महाराज...

साँवल तन पे पीताम्बर, प्रभु ऐसा लगता प्यारा
जैसे प्रथम प्रहर में सूरज ढ़के अंधेरा सारा
महिमा रुप की वरणी न जाय, हम शरण में तेरी आये हैं
हे लीलानन्द महाराज...

नाम की धुन में पागल होकर, नाचे ताता थैया
चन्दन तिलक करे तो लागे तू बलराम का भैया
हे भक्त वत्सल भगवान, हम शरण में तेरी आये हैं
हे लीलानन्द महाराज...

जब जब इस भूतल पर बाबा, पाप बहुत बढ़ जाता
ईश्वर रुप में तेरे जैसा, मनु धरती पर आता
कर दो सबका कल्याण, हम शरण में तेरी आये हैं।
हे लीलानन्द महाराज....

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : जिन्दगी की ना टूटे....)

मुझे चिन्ता है किसकी भला, मेरे संग लीलानन्द खड़ा।
बिजलियाँ गर गिरे तो गिरे, हाथ सर पे है तेरा धरा।।टेर।।

मैं जहाँ भी रहुँ हर घड़ी, मुझपे रहती निगाहें तेरी,
जो कदम डगमगाए मेरे, थाम लेता तू बाहें मेरी,
चाहे रास्ता हो-२, कांटो भरा.... मेरे संग....।।१।।

छोटी छोटी सी लहरों को भी, देखा कश्ती डुबोते हुऐ,
मैं डरुं क्या भंवर से बता, लीलानन्द तेरे होते हुऐ,
होऽऽ आऐ तुफां-२, बड़ा से बड़ा.... मेरे संग....।।२।।

धन दौलत मिले तो मिले, ना मिले तो भी कुछ गम नहीं,
सोनू खुश हूँ मैं इतने में ही, हर घड़ी तू मेरे संग हैं,
हीरे-मोती-२, में क्या है पड़ा.... मेरे संग....।।३।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : मेवाड़ी राणा)

चरणां री भक्ति म्हाने दिज्योरे रे लीलानन्द बाबा।।टेर।।

भगत हाँ थारा थाँसू अरज गुजारे,
कदम-कदम पर रक्षा किज्यो रे, लीलानन्द बाबा,
चरणां री...।।१।।

सेवा ना जानूँ थारी पूजा ना जानूँ,
चरणाँ में राखूँ सो ले लिज्यो रे, लीलानन्द बाबा,
चरणां री...।।२।।

घिस-घिस चन्दन थारे तिलक लगावाँ,
फूला री माला अपना लिज्यो रे, लीलानन्द बाबा,
चरणां री...।।३।।

म्हार भी मन-मन्दिर में ज्योति जगा दो,
अवगुण म्हार मन स तज दिज्यो रे, लीलानन्द बाबा,
चरणां री...।।४।।

धूप दिखावाँ थारै भजन सुणावां,
मन की इच्छा थे पूरी किज्यो रे, लीलानन्द बाबा,
चरणां री...।।५।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : तेरे बिना श्याम हमारा..)

तेरे बिना नाथ हमारा नहीं कोई रे,
हमारा नहीं कोई रे, सहारा नहीं कोई रे,
तेरे बिना नाथ...।।टेर।।

जबसे मैनें तुझको पाया
तूने अपने गले से लगाया,
तेरे जैसा भाव दिखाया नहीं कोई रे,
तेरे बिना नाथ... ।। १ ।।

मैंने सब कुछ तुझ पर वारा,
तू मुझको प्राणों से प्यारा,
तेरे जैसा साथ निभाया नहीं कोई रे,
तेरे बिना नाथ... ।। २ ।।

तेरी सूरत लागै प्यारी,
तू लीलानन्द लीलाधारी,
तेरे जैसा लाड लडाया नहीं कोई रे,
तेरे बिना नाथ... ।। ३ ।।

घर घर तेरा नाम जपाऊँ,
तेरी महिमा सबको सुनाऊँ,
तेरे जैसा मान बढ़ाया नहीं कोई रे,
तेरे बिना नाथ... ।। ४ ।।

।।हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।।हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

|| श्री बाबा स्तुति ||

(तर्ज : मैं तुलसी तेरे आँगन की)

दे दो ना, धुलि चरणन की,
सुनले ओ बाबा-२ सुनले अरज सारे भगतन की
दे दो ना....

तेरा क्या कुछ, घट जायेगा
बालक तेरा, तर जायेगा
भूख नहीं है मोहे दौलत की
दे दो ना....

तेरी दया से, जीवन पाया
तूने चाहा तो, चरणों में आया
लाज बचाले तेरे भगतन की
दे दो ना....

कर्म हमारे सुन्दर लिखना
दुष्कर्मों से दूर तू रखना
आस लगी है तेरे दर्शन की
दे दो ना....

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : चाँद आहे भरेगा...)

बाबा तकदीर मेरी, मुझसे रुठी हुई है
बदल देता तू किस्मत, बात झूठी नहीं है।।टेर।।

लोग कहते है बाबा, द्वार तेरा निराला
शरण जो तेरी आया, उसे तूने सम्भाला
देवता इस जहाँ में कोई तुझसा नहीं है।।
बदल देता.....

नाम सुनकर के बाबा, शरण में आ पड़ा हूँ,
नहीं छोडूगा तुझको, मैं भी जिद पे अड़ा हूँ
क्यों तू निष्ठुर बना है, बात सुनता नहीं है।।
बदल देता.....

क्यूं ये दरबार तेरा, पहले जैसा नहीं है
क्या तू दीनों के खातिर, देव वैसा नहीं है
टूटी उम्मीदें मेरी, नाव टूटी हुई है।।
बदल देता.....

हमारा काम होगा, तुम्हारा नाम होगा
अगर डूबेगी नैया, नाम बदनाम होगा
कहता 'बनवारी' जो भी, बात बिल्कुल सही है
बदल देता.....

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री बाबा स्तुति ।।

धीरे धीरे से मेरी जिन्दगी में आया
धीरे धीरे से दिवाना बनाया।।टेर।।

कैसे भूलूँगा मैं प्यार तुम्हारा
तुने मुझपे जो इतना लुटाया

जो कर ना सका वो तुने करके दिखलाया
मैं खड़ा हूँ यहाँ पर वो है प्रभु तेरी माया-२
धीरे धीरे से मेरे दिल को लुभाया
धीरे धीरे से दिवाना बनाया।

दिलदार लीलानन्द जब से बसा दिल में मेरे
तुम बन गए मालिक, हम हो गये चाकर तेरे-२
धीरे-धीरे से सेवा में जो लगाया
धीरे धीरे से दिवाना बनाया

मुझको तो भरोसा केवल बाबा तुम्हारा है
इस भक्त ने अपना सब कुछ तुझ पर वारा है-२
धीरे धीरे से साँसो में समाया
धीरे धीरे से दिवाना बनाया

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

|| श्री बाबा स्तुति ||

(तर्ज : दिल दिवाना...)

प्रेम का धागा तुमसे बाँधा
कभी टुटेगा....
चाहे जग रुठे, मेरा बाबा तू रुठेना

ना धन दौलत ना ही सोहरत न ही कोई खजाना
दिल ये चाहे लगा रहे बस दर पे आना जाना
तार जुड़े जो दर से तेरे कभी टुटे ना....
चाहे जग रुठे....

मोह के बंधन छुट गये है, जब से जुड़ा हूँ तुमसे
अब तो मिलता है हर गम भी, मुस्कुरा के हमसे
थामे रखना, हाथ मेरा, ये कभी छुटे ना....
चाहे जग रुठे....

समझ के मुझको अपना तुने, पकड़ी मेरी कलाई
हर रस्ता आसान हुआ है, बना जो तु हमराही
जीवन पथ पे साथ तुम्हारा कभी छुटे ना....
चाहे जग रुठे....

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

|| श्री बाबा स्तुति ||

इतना क्या कम है उपकार तेरा
इज्जत की रोटी खाता परिवार मेरा

औकात से ज्यादा तुमने दिया है
मेरे लिए तुमने सब कुछ किया है
कैसे मैं भुलुंगा ये एहसान तेरा।

इज्जत का गहना बिकने दिया ना
दुनिया में सर मेरा झुकने दिया ना
हाथ किसी के आगे फैलै ना मेरा

यूँ ख्वाइशों की सीमा कहां है
जो है जरुरत वो मिल रहा है
रुकने दिया ना तुने कोई काम मेरा

विश्वास 'सोनु' हैं मेरे मन में
नेकी छिपी हर तेरे करम में
संतोष ही जीवन का आधार मेरा।।

|| श्री बाबा स्तुति ||

मेरे लीलानन्द महाराज, ये तेरो चन्दन रो श्रृंगार
नजर तोहे लग जायेगी

तेरी सुरतिया पे मन मोरा अटका
प्यारा लागे तेरा पीला पटका
तेरे गल तुलसी की माल ओ हो ओ हो
ये तेरा चन्दन.....

लाल रुमाली पे मन मेरा अटका
तु भी तो है मेरे श्याम सलोना
तेरी लीला अपरम्पार ओ हो ओ हो
ये तरो चन्दन....

तेरी अदाओं पे मन मोरा अटका
भक्तों को लग गया तेरा चस्का
तु इतना ना करियो श्रृंगार
ये तरो चन्दन....

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

|| श्री बाबा स्तुति ||

(तर्ज : आजा रे अब मेरा...)

लीलानन्द को सदा तुने ध्याया
तेरे पास है सदा पाया
फिर भी क्या तुने उसे पाया है

संतो ने उसे तो कृष्ण कहा
ना जाने वो कैसे कृष्ण दिखा
तुने स्वारथ में उसको ध्याया है
गुरुवर में रुप जो पाया है
लीलानन्द को सदा.....

हरी नाम का रसिया ठाकुर है
वो तो प्रेम भाव में आतुर है
क्या तुने कभी हरी नाम जपा
नृत्य करते हुए तुझे गुरु दिखा
लीलानन्द को सदा....

क्यूँ फिरता तु मारा इधर उधर
उसकी तो है सीधी सादी डगर
वो तो प्रेम भावों का भूखा है
उसका तो तरीका अनुठा है
लीलानन्द को सदा........

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : बचपन की...)

लीलानन्द भजो प्यारे, यही नंद का लाला है,
मत भटको इधर-उधर, यही जग रखवाला है।।

है नैन रसीले भी, गल तुलसी की माला है,
माथे पे तिलक सोहे, रंग रुप का काला है,
श्रृंगार बसंती है, तन ओढ़े दुशाला है।।
मत भटको....

जमुना के किनारे पर, ये रास रचाता है,
ग्वालों को संग लेकर, ये धेनु चराता है,
माखन को चुरैया ये, भक्तों का प्यारा है,
मत भटको....

मधुवन में जाकर के, ये बेनु बजाता है,
इक तान सुरीली पर, सखियों को बुलाता है,
है नन्द दुलारा ये, राधा का भी प्यार है,
मत भटको....

आया जो भी दर इसके, ये उसे अपनाया है,
एक लाला-रुमाल से, सबका दुख टाला है,
है भाव का भूखा ये, नैनों का सितारा है,
मत भटको....

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

|| श्री बाबा स्तुति ||

(तर्ज : तुम्हीं मेरी मंजिल...)

सापट वाले लीलाधारी,
हम सब आये हैं शरण तिहारी, सापट वाले....

जग में तुझसा कोई ना पाया,
तुम तरुवर हो, दे दो छाया,
लाखों की तुमने विपदाएँ टारी,
हम भी पड़े हैं लेके आश तुम्हारी, सापट वाले..

नैया भँवर में फँसी जा रही है,
होठों पे तेरे हँसी आ रही है,
हँस लो तुम भी, हँसे दुनिया सारी,
बिगड़ी हुई है किस्मत हमारी, सापट वाले..

मोह माया का जीवन मेरा,
इन चरणों में दे दो बसेरा,
झुठे रिश्ते नाते, झूठी भाईचारी,
आप पिता है और महतारी, सापट वाले..

चारों तरफ बाबा घोर अंधेरा,
जीवन में कर दो अब तो सवेरा,
पास नहीं है कुछ भी हम है भखारी
भजनों की लेलो भेंट हमारी, सापट वाले...

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

|| श्री बाबा स्तुति ||

ओ बाबा कब तुम दया करोगे,
सापट ग्राम वाले....

गहरी नदिया गाँव पुरानी, बन जा खेवनहारा,
मल्लाह बनकर आओ बाबा, नैया है तेरे हवाले
सापट ग्राम वाले....

महलों में भरमाया मुझको, माया ने है घेरा,
दुख पीड़ा मोहे जकड़े बैठी, बादल छाये काले,
सापट ग्राम वाले....

लीलाओं के नन्द है बाबा, भक्त वत्सल कहलाये
भक्तों की पीड़ खुद ले लेवे, हो सबके रखवाले
सापट ग्राम वाले....

अधमी हूँ मैं पापी हूँ मै, मुझमें अवगुण सारे
सदन कँसाई गणिका तर गई, मुझको भी अपना ले
सापट ग्राम वाले....

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : घर आया मेरा परदेशी)

बाबा थानै आया सरसी,
म्हारी लाज बचाया सरसी।

दीनों का दीनाबन्धु, महर करो करणा सिन्धु,
दुख म साथ निभाया सरसी म्हारी लाज....

नैया म्हारी पार करो, आओ अब पतवार धरो,
नैया न पार लगाया सरसी, म्हारी लाज....

दुःख पीड़ा है बरस रही, आँख दया को तरस रही,
टाबरा न कालज लगाया सरसी, म्हारी लाज....

धीरज म्हारो छुट्‌यो जाय, आश को बांध भी टूट जाय
आकर धीर बन्धाया सरसी, म्हारी लाज....

जब तक तन में प्राण रहे, लब पर थारो ही नाम रहे
बिगड़ी बात बनाया सरसी, म्हारी लाज....

इ जम म नहीं कोई अमर, मानव जीवन है नश्वर,
हाथ पसारया जायाँ सरसी, म्हारी लाज बचाया....

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : दिल का खिलौना...)

बाबा हमारा हमसे रुठ गाय,
साथ हमारा कैसे छूट गया,–२

लीलानन्द ठाकुर, लीलाधारी,
समझ न आये बाबा महिमा तुम्हारी...२

सापट है धाम तुम्हारा, पागल है नाम तुम्हारा,
लाल रुमाली वाला, कहे जग सारा,
क्या नाता तुम्हारा, हमसे टूट गया
बाबा हमारा...

वृन्दावन में, उत्सव के आते,
द्वार पे जाके तेरे, उधम मचाते
हँसना हँसाना तेरा, रुठे को मनाना तेरा,
भूखे को खिलाना, कैसे भूलेंगे बाबा,
साँस हमारा तुम बिन छुट गया,
बाबा हमारा...

नैनों के तारे, प्राणों से प्यारे,
भीगी हुई अँखियों से तुझको पुकारे,
जल्दी से आओ बाबा, देर ना लगाओ बाबा,
गले से लगा लो हमको, तरस रहे हैं,
जीवन हमारा तुझ बिन लूट गया,
बाबा हमारा...

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

|| श्री बाबा स्तुति ||

(तर्ज : टुटे हुए ख्वाबो ने...)

हे लीलानन्द बाबा, तेरी याद बहुत आये,
आओ आओ अब आ जाओ, क्यूँ हमको तरसाये....

तुम दीनों के स्वामी, तू ही नाथ अनाथों के,
करे छाँह में वास सभी, तेरे इन हाथों के...
क्या भूल हुई हमसे, जो इतनी सजा पाये,
आओ आओ.....

अँसुओं से भरी आँखें, तुझको ही बुलाती है,
आवाज हमारी क्या, तुझ तक नहीं जाती है..
तुम बिन अब कौन सुने, अपना तुझको पाये
आओ आओ....

अनजान बने बाबा, अब भूल रहे हमको,
जब तक ये साँस रहे, नहीं भूलेगे तुमको
एक चाह है दरशन की, तेरे चरणों में लाये
आओ जाओ....

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : एक प्यार का नगमा...)

अरदास हमारी है, आधार तुम्हारा है,
स्वीकार करो बाबा प्रणाम हमारा है।।टेर।।

नैनों में रमे हो तुम, मेरे दिल में बसे हो तुम,
तुझे पल भी ना बिसराऊँ, इस तन में रमे हो तुम,
मत मुझसे बिछड़ जाना, ये दास तुम्हारा है....

बिन सेवा किये तेरी, मुझे चैन न आता है,
बिन ज्योति लिये तेरी, मेरा मन घबराता है,
होठों पे रहे हरदम, एक नाम तुम्हारा है....

मेरी जीवन नैया को, तेरा ही सहारा है,
तुम मात पिता मेरे और सतगुरु प्यारा है,
नैया का खिवैया तू, तू ही कृष्ण हमारा है....

अर्जी स्वीकार करो, भव सागर पार करो,
सिर हाथ फिरा कर के, मेरा उद्धार करो,
गिरते को उठाना, प्रभु काम तुम्हारा है....

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री बाबा स्तुति ।।

बिगड़ी मेरी बना दे,
ओ लीलानन्द बाबा।।टेर।।

तन पे पीताम्बर तेरे,
गल में है तुलसी माला,
दरशन मुझे दिखा दे, ओ लीलानन्द बाबा...

आसन जमाये बैठे,
बाबा है वृन्दावन में
भव पार अब लगा दे, ओ लीलानन्द बाबा...

ओ लाल रुमाली वाले,
आखिर क्यूँ मुझसे रुठे,
मेरी खता बता दे, ओ लीलानन्द बाबा...

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : थारो साँचो दरबार..)

म्हारा लीलानन्द सरकार, प्यारा भगतां रा करतार
बाबा म्हारा घरां आज्यो जी।।

महिमा थारी गावां बाबा, चरणां शीश नवावां,
जोवां थारी बाटड़ली, नित थारो ध्यान लगावां,
सुनके म्हारी भी पुकार, बेगा आ जाओ इक बार,
म्हाने गले स्यूं लगाज्यो जी।।
आज्योजी बाबा म्हार घरां आज्यो जी।।

लेकर के विश्वास मन में, थार द्वार आयो,
स्वास्थ की दुनिया में बाबा, थान ही अपनो पायो,
मैं हूँ निर्धन और लाचार, लेल्यो थार ही चरणार,
बाबा मत बिसराज्यो जी।।
आज्योजी बाबा म्हार घरां आज्यो जी।।

दरशन देद्यो बाबा कदस, आख्याँ तरस म्हारी,
लाल रुमाली लेकर आजा, ओ पीताम्बरी धारी,
म्हारी नाव फँसी मझधार, टूटन लागी है पतवार,
बाबा पार लगाज्यो जी।।
आज्योजी बाबा म्हार घरां आज्यो जी।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री बाबा स्तुति ।।

फागुण को मेलो यो बड़ो अलबेलो,
चालो वृन्दावन घुमाय ल्याऊँ,
बाबा का दरशन कराय ल्याऊँ।।टेर।।

भीड़ लगे दरबार म थारे,
विपदा बाबा सबकी टारे,
ब्रजरज मस्तक लगाय ल्याऊँ।। बाबा का...।।१।।

रंग उड़ाती निकली सवारी,
रथ पर बैठयो लीलाधारी,
यमुना म थाने नुहाय ल्याऊँ।। बाबा का...।।२।।

बंशीवट की महिमा न्यारी,
बरसाने में राधा प्यारी,
मधुवन में रास दिखाय ल्याऊँ।। बाबा का...।।३।।

नंदग्राम में कुँवर कन्हैया,
नाचे गोपी ग्वालन गईया,
प्यारी-प्यारी वंशी सुणाय ल्याऊँ।। बाबा का...।।४।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।
।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : सावन की बरसे बदरिया)

फागुण की छायी बदरिया,
चलो बाबा दुअरिया
बाबा दुअरिया चलो, ब्रज की नगरिया।।टेर।।

तन पीताम्बर प्यारो - प्यारो,
श्याम कलेवर न्यारो - न्यारो,
कर में लाल रुमलिया, चलो बाबा दुअरिया।।१।।

वृन्दावन में वास तुम्हारा,
भगतों की आँखों का तारा,
ले लो ना हमरी खबरिया, चलो बाबा दुअरिया।।२।।

रंग पिचकारी ले लो संग में,
बाबा को रंग दो गुलाबी रंग में,
कोई लगाओ केशरिया, चलो बाबा दुअरिया।।३।।

।।हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री बाबा स्तुति ।।

(तर्ज : धमाल)

महीनो फागण को बाबा जी थार ब्रज म आया रे
महीनो फागण को...

कई दिनां स आश लगाया, जद यो फागण आयो रे,
बाबा के संग होली खेला, चाव लगायो रे,
महिनो फागण की...
दूर दूर स भक्तां री टोली, थार द्वार आई रे
लीलाधाम और लीलाकुँज मे, खुशीयाँ छाई रे,
महीनो फागण की...
धूम मचाती निकली सँवारी, लीला कुँज मे चाली रे,
ब्रज की धरती भई गुलाबी, छटा निराली रे,
महिनो फागण की...
साँवरीयो भी राधा के संग होली खेलण आयो रे,
ब्रज के रज की महिमा न्यारी, कोई पार न पायो रे,
महिनो फागण की...
देखण ब्रह्मा विष्णु दुर्गा लक्ष्मी गणपत आया रे,
पार्वती संग भंगिया पीकर शंकर आयो रे,
महिनो फागण की...
भोला भाला भगत हाँ थारा, ब्रज म होली खेलां रे,
मन का कष्ट मिटावण खातिर होया भेला रे,
महिनो फागण की...

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

श्री राधे गोविन्द गोपाला तेरा प्यारा नाम है।।टेर।।

मोर मुकुट माथे तिलक विराजे गल बैजन्ती माला-२,
कोई कहे वसुदेव के नंदन कोई कहे नन्दलाला।।१।।

जमुना किनारे कृष्ण कन्हैया मुरली मधुर बजावे-२,
ग्वाल-बाल के संग में कान्हा माखन मिसरी खावे।।२।।

जल में गज को ग्राह ने घेरा, पल में चक्र चलाया-२,
जब जब भीड़ पड़ी भक्तन पर, नंगे पावों आया।।३।।

द्रोपदी ने जब तुम्हें पुकारा साड़ी आन बढ़ाई-२,
भक्तों के खातिर आप बने प्रभु आकर नन्दा नाई।।४।।

अर्जुन का रथ तुमने हाँका, भारत भई लड़ाई-२,
नाम को लेकर विष भी पी गई देखो मीरा बाई।।५।।

नरसी के सब काज सँवारे, मुझको मत बिसरारे-२,
जनम-जनम से तेरा 'पगला' तेरा ही नाम पुकारे।।६।।

।।हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

|| श्री श्याम वन्दना ||

ओ मेरे साँवरेऽऽऽ मेरी जिन्दगी को ऐसे सजा दिजीए

आपकी महफिल आपके गीत, आपका ही श्रृंगार करुँ
जब तक नैनो के दीप जले, आपका ही दीदार करुँ
तेरा हो के रहूँ जब तक मैं जिऊSSS
मुझे सेवा में अपनी लगा लिजीए
... ओ मेरे सांवरे

ना ही किसी बैर रहे, न ही किसी से तकरार करुँ
लब पे सदा मुस्कान रहे, हर दिल से मैं प्यार करुँ
तेरा हो के रहूँ, जब ते मै जिऊSS
प्रभु मुझको भी प्रेम सिखा दिजीये
... ओ मेरे सांवरे

चाहे खुशी हो चाहे हो गम, हर पल तू मेरे पास रहे
तेरा ही सुमिरन करता रहूँ, जब तक तन में साँस रहे
मर भी जाऊँ अगर, छुटेना ये दरSSS
सोनू कहे चरणों में लगा लिजीये....
... ओ मेरे सांवरे

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : छुरिया चल जावे...)

तुम झोली भर लो भक्तों रंग और गुलाल से,
होली खेलांगा आपा गिरधर गोपाल से।।टेर।।

कोरा-कोरा कलश मंगाकर, उसमें रंग घुलवाना-२,
लाल गुलाबी नीला पीला, केशर रंग मिलवाना-२
बच-बच के रहना, उनकी टेढ़ी मेढ़ी चाल से,
होली खेलांगा आपा...।।१।।

लायेंगे वो संग में अपने, ग्वाल बालों की टोली-२
मैं भी रंग अबीर मलूंगी, और माथे पे रोली-२
गायेंगे फाग मिलके, ढप खड़ताल से,
होली खेलांगा आपा...।।२।।

श्याम पिया की बजे बाँसुरी, ग्वालों की मंजीरे-२,
चंग बजावे ललिता गावे, राधा धीरे-धीरे-२,
गायेंगे भजन सुहाने हम भी सुरताल से,
होली खेलांगा आपा...।।३।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : तुम रुठ के मत जाना...)

बस इतनी तमन्ना है, श्याम तुम्हें देखूँ,
घनश्याम तुम्हें देखूँ।।टेर।।

सिर मुकुट सुहाना हो, माथे तिलक निराला हो,
गल मोतियन माला हो, जब श्याम तुम्हें देखूँ।।१।।

कानों में हो बाली, लटके लट घुँघराली,
तेरे अधर पे मुरली हो, जब श्याम तुम्हें देखूँ।।२।।

बाजुबंद बाहों में हो, पैजनियाँ पावों में हो,
होठों पे हँसी कुछ हो, जब श्याम तुम्हें देखूँ।।३।।

दिन हो या अंधेरा हो, चाहे शाम सबेरा हो,
सोऊँ तो सपनों में बस श्याम तुम्हें देखूँ।।४।।

चाहे घर हो नन्दलाला, कीर्तन हो गोपाला,
हर जग के नजारे में बस श्याम तुम्हें देखूँ।।५।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

देना हो तो दीजिये, जनम जनम का साथ,
मेरे सर पर रख दे बाबा, अपने ये दोनों हाथ।।टेर।।

देने वाले श्याम प्रभु से, धन और दौलत क्या मांगे,
श्याम प्रभु से मांगे तो फिर, नाम और इज्जत क्या मांगे,
मेरे जीवन में अब करदे, तू किरपा की बरसात।।१।।

श्याम तेरे चरणों की धूलि, धन दौलत से महँगी है,
एक नजर किरपा की बाबा, नाम इज्जत से महँगी है,
मेरे दिल की तमन्ना यही है, करुँ सेवा दिन और रात।।२।।

झुलस रहे है गम की धूप में, प्यार की छईयाँ करदे तू,
बिन पानी के नाव चले ना, अब पतवार पकड़ ले तू,
मेरा रस्ता रौशन करे दे, छाई अँधियारी रात।।३।।

इस जनम में सेवा देकर, बहुत बड़ा एहसान किया,
तू ही राम और कृष्ण है बाबा, हमने तुम्हें पहचान लिया,
हम साथ रहें जनमों तक, बस रखलो इतनी बात।।४।।

सुना है हमने शरणागत को, अपने गले लगाते हो,
ऐसा हमने क्या मांगा जो देने में हिचकाते हो,
चाहे जैसे रख बनवारी बस होती रहे मुलाकात।।५।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : जनम जनम का साथ है...)

जनम जनम का साथ है, तुम्हारा हमारा, हमारा तुम्हारा
करेंगे सेवा इस जीवन में, पकड़ों हाथ हमारा।।टेर।।

जब भी जनम मिलेगा, सेवा करेंगे तेरी,
करते हैं तुमसे वादा, शरण रहेंगे तेरी,
हर जीवन में बन कर साथी, देना साथ हमारा।।१।।

दुनिया बनाने वाले, ये सब है तेरी माया,
सूरज-चाँद सितारे, सब कुछ तूने बनाया,
फँस ना जाऊँ मैं माया में, दे आशीर्वाद तुम्हारा।।२।।

जब से होश सम्भाला, तब से है हमने जाना,
तेरी भक्ति ना मिले, जीवन व्यर्थ गँवाना,
बनवारी इन्सान जगत में फिरता मारा मारा।।३।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।
।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

आयो रे आयो देखो, आज मेरा गिरधर गोपाल,
ढ़ोलक शंख नगाड़ा बाजे, मन्दिर को बाजे घड़ियाल।।टेर।।

मोर मुकुट कानां में कुण्डल, उर बैजन्ती मोतियन माल,
ठुमक-ठुमक कर चाल दिखावे, गूंजे पायल की झंकार।।१।।

नैन रसीले वस्त्र रंगीले, काले घूंघर वाले बाल,
यमुना तट पे रास रचावे, संग में ले के गोपियन ग्वाल।।२।।

माखन मिश्री भोग लगावां, कंचन भरे पड़े हैं थाल,
कीर्तन करती मंडली आये, भज गोविन्दा भज गोपाल।।३।।

कोयल शब्द सुनावे सुन्दर, मोर भी नाचे पंख पसार,
ले मुरली कर तान सुनाओ, सावन की ये छायी बहार।।४।।

काले-काले बादल छाये, बरसा की ये पड़े फुहार,
भोला भी दर्शन को आया, डाले गले में काला नाग।।५।।

नन्द के आनन्द भयो, जय कन्हैया लाल की,
माखन मिश्री थाने खुवांवा, और झुलावां पालकी।।६।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

झाँकी निहारूँ तोहार, मनवा मगन हुई गवां रे,
जागी है किस्मत हमार, हमका दर्शन हुई गवां रे।।टेर।।

जग से निराला मेरा श्याम रे, श्याम रे, श्याम रे,
पार करे तेरा नाम रे, नाम रे, नाम रे,
कृष्ण मुरारी, गिरिवर धारी,
उत्सव मनाऊँ तोहार, आँगन चमन हुई गवां रे।।१।।

मुरली तू प्यारी बजाओ रे, बजाओ रे, बजाओ रे,
आकर के रास रचाओ रे, रचाओ रे, रचाओ रे
चीर चुरैया, धेनु चरैया,
कृपा से तोहरी ओ श्याम माटी माखन हुई गवां रे।।२।।

उत्सव मनाये तेरा आजा रे, आज रे, आज रे,
पूरण करे सब काज रे, काज रे, काज रे,
राधा भी नाचे, श्याम भी नाचे,
इसलिये तेरो नाम। राधारमण हुई गवां रे।।३।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।
।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

छोटी-छोटी गइयां, छोटे-छोटे ग्वाल,
छोटो सो म्हारो मदन गोपाल।।टेर।।

आगे आगे गइयां, पीछे-पीछे ग्वाल,
बीच-बीच चाले, म्हारो मदन गोपाल।।१।।

कैसे चाले गइयां, कैसे चाले ग्वाल,
कैसे-कैसे चाले म्हारो मदन गोपाल।।२।।

धीमी चाले गइयां, नाचे कूदे ग्वाल,
ठुमकत चाले, म्हारो मदन गोपाल।।३।।

कित रहे गइयां, कित रहे ग्वाल,
कित रहे म्हारो मदन गोपाल।।४।।

खिरक में गइयां, झोपड़ी में ग्वाल,
सन्तों के संग म्हारो मदन गोपाल।।५।।

क्या खावे गइयां, क्या खावे ग्वाल,
क्या खावे म्हारो मदन गोपाल।।६।।

घास खावे गइयां, दूध पीवे ग्वाल,
माखन खावे म्हारो मदन गोपाल।।७।।

झूल ओढ़े गइयां, लम्बी टोपी ग्वाल,
कारी कामर ओढ़े, म्हारो मदन गोपाल।।८।।

।।हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

बृज के नन्दलाला, राधाजी के साँवरिया,
सब दुख दूर हुए, जब तेरा नाम लिया।।टेर

मीरा पुकारे तुम्हें गिरधर गोपाला,
भर गया अमृत से विष का भरा प्याला,
कौन मिटाये उसे जिसे तूने राख लिया-सब दुख...।।१।।

जब तेरे गोकुल पर आई विपदा भारी,
एक इशारे से सारी विपदा टारी,
उठ गया गोवर्धन, जिसे तुने उठा लिया- सब दुख...।।२।।

नैनों में श्याम बसे मन में बनवारी,
सुध बिसराय दई मुरली की धुन प्यारी,
मन के मधुवन में रास रचाओ रसिया-सब दुख...।।३।।

देख रहे हो तुम मेरे दुखड़े सारे,
कब दर्शन दोगे नैंनो के तारे,
अधरों पे मुरली कांधे कामलिया- सब दुख...।।४।।

।।हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : मैं तो छोड़ चली)

मैनें ओढ़ लई ओढ़नी रे, नटवर नागरिया,
रखना, रखना प्रभु इसकी लाज, नटवर नागरिया।।

भक्तों नें प्यारी चुनरिया रंगाई,
भावों के तारों से चूनर सजाई,
बूंटे-बूंटे पे, है तेरा नाम, नटवर नागरिया।।१।।

तेरे भरोसे चूनर मैने ओढ़ी,
ना मुझमें शक्ति ना मैं कोई जोगी,
मैं तो छोटा सा, तेरा गुलाम, नटवर नागरिया।।२।।

चूनर ने ऐसा दीवाना बनाया,
गाँव-गाँव गली-गली मुझको नचाया,
चाहे दुनिया, करे बदनाम, नटवर नागरिया।।३।।

किस किसको मिलती है चूनर कहो ना,
किस्मत से मिली मुझे, मैं तो तजूं ना,
नन्दू भजनों का ये परिणाम, नटवर नागरिया।।४।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : कव्वाली.....)

लिखने वाले ने लिख डाला
मिटा नहीं कोई, पाया-३, श्याम
बिगड़ी बनाने वाले बाबा, तेरी शरण में आया।।टेर।।

राजाओं के राजा हो तुम
भीख मांगने वाले हैं हम-२
देने वाला ये ना सोचे-२
मांगने कौन है, आया-३, श्याम,
बिगड़ी बनाने वाले...।।१।।

किसकी लाऊँ बाबा सिफारिश,
मेरी तुझसे है ये गुजारिश-२,
तेरा दर अब आखिरी दर है-२
सोच के मैं हूँ, आया-३, श्याम,
बिगड़ी बनाने वाले...।।२।।

एक नजर जिस पर भी डाले,
वक्त बदलते देर न लागे-२,
बनवारी मैं भटक भटक कर-२
सही जगह पर, आया-३, श्याम
बिगड़ी बनाने वाले...।।३।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

बनवारी रे, जीने का सहारा तेरा नाम रे,
मुझे दुनियाँ वालो से क्या काम रे।।टेर।।

झूठी दुनियाँ झूठे बन्धन झूठी है ये माया,
झूठे संसार में आना जाना झूठी है ये काया,
ओ प्रभु साँचो है थारो नाम रे...।।
बनवारी रे...।।१।।

रंग में तेरे रंग गई गिरधारी छोड़ दिया जग सारा,
बन गई तेरे प्रेम की जोगन लेकर मन इकतारा,
ओ मुझे प्यारा है तेरा धाम रे...।।
बनवारी रे...।।२।।

दर्शन तेरा जिस दिन पाऊँ, हर चिन्ता मिट जाये,
जीवन मेरा इन चरणों मैं आश की ज्योति जलाये।।
ओ मेरी बाँह पकड़लो श्याम रे...।।
बनवारी रे...।।३।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

आओ कन्हैया, आओ मुरारी,
तेरे दर पे आया सुदामा भिखारी।।टेर।।
क्या मैं बताऊँ क्या मैं सुनावुं,
एक दुःख नहीं जो मन में छुपावुं,
घट गट की जानते हो तुम तो मुरारी...तेरे दर पे..।।१।।

नैनों में आंसू उठे ना कदम हैं,
आओ कन्हैया अब तो होठों पे दम है,
आकर के देखो दशा तुम हमारी...तेरे दर पे।।२।।

ना तो डगर है, ना कोई घर है,
फटे हुए कपड़े हैं, तुम्हे सब खबर है,
क्या तुम परीक्षा लेते हमारी...तेरे दर पे...।।३।।

आवाज मेरी पहुँची नहीं क्या?
दरवान ने तुझको खबर नहीं दी क्या?
क्या नींद मे तुम सोये मुरारी?...तेरे दर पे...।।४।।

क्या मुझसे दोष हुआ, हुआ क्या गुनाह है,
दीनों का नाथ क्यों तू निष्ठूर बना है,
पाप किया क्या मैंने भारी...तेरे दर पे...।।५।।

आवो कन्हैया छुटे अब तो दम है,
अगर अब न आये तो माँ की कसम है,
मां की कसम सुनके पहुँचे मुरारी...तेरे दर पे...।।६।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

ओ पालनहारे निर्गुन और न्यारे,
तुमरे बिन हमरा कोई नहीं,
हमरी उलझन, सुलझाओ भगवन्,
तुमरे बिन हमरा कोई नहीं।।

हम गरीबो का तू है सहारा,
इस दुनियां में कोई ना हमारा,
जो जग से हारा, तूने ही तारा।।
तुमरे...।।१।।

तुम्हारे जैसा कोई भी ना साथी,
तू दीपक है हम सब है बाती,
हमरा ये जीवन, तुझको है अर्पण।।
तुमरे...।।२।।

श्याम कहता है सुनले कन्हैया,
तेरे हाथों में अब है ये नैया,
भव से कर दो पार, मानूँगा उपकार।।
तुमरे...।।३।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

मन बस गयो नन्दकिशोर अब जाना नहीं कहीं और,
बसा लो वृन्दावन में-२।।टेर।।

सौंप दिया अब जीवन तोहें, राखो जेही विधि रखना मोहें,
तेरी चरण पड़ी कर जोड़, अब जाना नहीं कही और।।
बसा लो वृन्दावन...।।१।।

वृन्दावन की धूल बना दो, कालिन्दी का कूल बना दो,
मैं तो नाचूँगी बने के मोर, अब जाना नहीं कहीं और।।
बसा लो वृन्दावन...।।२।।

चाकर बनकर सेवा करुँगी, मधुकरि माँग कलेवा करुँगी,
तेरा दरश करुँगी उठि भोर, अब जाना नहीं कहीं और।।
बसा लो वृन्दावन...।।३।।

अरज मेरी मंजुर ये करना, वृन्दावन से दूर न करना,
कहे मधुप हरिजी कर जोड़, अब जाना नहीं कहीं और।।
बसा लो वृन्दावन...।।४।।

।।हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

हे गिरधर गोपाल लाल, तूँ आजा मेरे आँगना,
माखन मिसरी तुझे खिलाऊँ, और झूलाऊँ पालना।।

मैं तो अर्जी कर सकता हूँ, आगे मरजी तेरी है,
आना हो तो आ साँवरिया, फेर करै क्यूँ देरी है,
मुरली की आ तान सुनाना, चाल ना टेढ़ी चालना।।१।।

गंगाजल से कलश भरा है, दतवन दर्पन कंघा है,
वस्त्र परहाऊँ रंग रंगीला, मन भावा और चंगा है,
खेलण नै तनै देऊँ खिलौना, आना हो ता आवना।।२।।

चन्दन चौकी थाल सजा है, खीर चूरमा भात से,
दुध मलाई तुझे खिलाऊँ, जीमले मेरे हाथ से,
तेरी ही मरजी कै माफिक, खाना हो सो खावना।।३।।

धन्ना जाट ने तुझे पुकारा, रुखा सूखा खाया तूँ,
करमा बाई ल्याई खीचड़ो रुचि-रुचि भोग लगाया तूँ,
मेरी बार क्यों रुस के बैठा, भायी ना मेरी भावना।।४।।

।।हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : हम तुम चोरी से...)

राधिका गौरी से, विरज की छोरी से,
मैया करादे मेरो ब्याह।।टेर।।

जो नहीं ब्याह करावे, तेरी गैयां नहीं चराऊँ,
आज के बाद मैया, तेरी देहली पर न जाऊँ
आयेगा रे मजा रे मजा, अब जीत हार का...
राधिका गौरी से...।।१।।

चन्दन की चौकी पर मैया, तुझको बैठाऊँ,
अपनी राधिका से मैं चरण तौरे दबवाऊँ,
भोजन बनवाऊँगा - बनवाऊँगा, मैं छत्तीस प्रकार के...
राधिका गौरी से...।।२।।

छोटी सी दुल्हनियाँ जब, अंगना में डोलेगी,
तेरे सामने मैया, वो घूँघट ना खोलेगी,
दाऊ से जा कहो - जा कहो, वो बैठेंगे द्वार पे...
राधिका गौरी से...।।३।।

सुन बाते लाला की, मैया बैठी मुस्काये,
लेकर बलैया मैया, हिवड़ै से अपने लगाये,
नजर कहीं लग जायना - लग जायना, मेरे लाल के...
राधिका गौरी से...।।४।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

आ गया मुरली वाला, अब आ गया मुरली वाला-२।।

मोर मुकुट माथै तिलक बिराजै, गल मोतियन की माला साजै,
साँवली सूरत वाला...अब आ गया मुरलीवाला।।१।।

कानन कुण्डल नैन रसीले, वस्त्र बसन्ती रंग रंगीले,
काली कमली वाला...अब आ गया मुरलीवाला।।२।।

अर्जुन के रथ को जो हाँका, मन मोहन साँवरियाँ बाँका,
चक्र सुदर्शन वाला...अब आ गया मुरलीवाला।।३।।

पाँवों में पैजनियाँ सोहे, राधा जिस पर तन मन खोये,
राधे गौरी वो काला...अब आ गया मुरलीवाला।।४।।

जमुना तट पर रास रचाये, किसे रुलाये किसे हँसाये,
चीर चुराने वाला...अब आ गया मुरलीवाला।।५।।

गोकुल का ये ग्वाल कहाये, माखन चुरा चुरा कर खाये,
भक्तों का प्रतिपाला...अब आ गया मुरलीवाला।।६।।

आओ गाओ ख़ुशी मनाओ, नाच नाच कर इसे रिझाओ,
पीड़ा हरने वाला...अब आ गया मुरलीवाला।।७।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : जब जब बहार आई...)

सुन श्याम मुरली वाले, कब से तुम्हें पुकारे,
अब तो तू आ जा रे।।टेर।।

सुनते है श्याम तेरी, महिमा है बड़ी भारी,
जिसने तुम्हें पुकारा, उसकी ही विपदा टारी,
जब हम तुम्हें पुकारे, जाकर कहाँ छुपा रे।।
अब तो तू आ जा रे...।।१।।

तेरी साँवली सूरत ये, मन में समा गई है,
बाँकी अदा तुम्हारी, दिल को लुभा गयी है,
फिरता हूँ खोजता मैं, तुमको ही श्याम प्यारे।।
अब तो तू आ जा रे...।।२।।

मिलता भला क्या तुमको, भक्तों को सताने में,
जाता भला क्या तेरा, एक बार आ जाने में,
जब दीन बन्धु हो तुम मत नाम को लजा रे।।
अब तो तू आ जा रे...।।३।।

मानों या तुम ना मानो, हम भक्त हैं तुम्हारे,
आना पड़ेगा तुमको, गर स्वामी हो हमारे,
ताराचन्द आश लेकर, आया है तेरे द्वारे।।
अब तो तू आ जा रे...।।४।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री दुर्गा वन्दना ।।

(तर्ज : मेरा दिल ये पुकारे ...)

तेरे नाम का पुजारी आया, तेरे दर का भिखारी आया,
मैंया दे दो दरशन, काटो सारे मेरे गम।।।।टेर ।।

बिन देखे तुझे नींद आती नहीं, माँ नहीं,
धोक खाये बिना याद जाती नहीं, माँ नहीं,
होठों पे है तेरा नाम, रटता सुबह और शाम,
मेरे सिर पे हाथ फिरा जा।।मैया दे दो...।।१।।

दर छोड़ तेरा माँ जाऊँ कहाँ, माँ कहाँ,
दुःख दर्द मेरा माँ सुनाऊँ कहाँ, माँ कहाँ,
माँ तू ही है आधार, तेरी महिमा अपार,
होके सिंह सवारी आजा।।मैया दे दो...।।२।।

तेरे चरणों से कैसे, लिपट जाऊँ माँ, मेरी माँ,
तुम कहाँ हो छुपी किस दर जाऊँ माँ, मेरी माँ,
क्यूँ है इतनी खफा, मुझे इतना बता,
मेरे नयनों में आके समा जा।। मैया दे दो...।।३।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री दुर्गा वन्दना ।।

(तर्ज : देना हो तो दीजिये..)

बैठी हो माँ सामने, कर सोलह सिंगार-२
तू करुणा की है मूरत, और ममता का भंडार।।टेर।।

निरख रही हो हम भगतों को, बड़े प्यार से जग जननी,
इसी तरह हम भगतों को भी, तेरी ही सेवा करनी,
तू हरदम देती रहना-२, हमको माँ प्यार दुलार।।१।।

तेरी ममता की छाया में, इसी तरह हम पले बढ़े,
तेरी किरपा से ही माता, हम अपने पैरों पे खड़े,
तेरे बच्चों को देने में-२, तू करती नहीं इन्कार।।२।।

हम बच्चों पे हरदम मैया, आशीर्वाद तुम्हारा हो,
हर्ष कहे मां शेरों वाली, हर पल साथ तुम्हारा हो,
तू हाथ दया कर रखना-२, साँचा तेरा दरबार।।३।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री दुर्गा वन्दना ।।

(तर्ज : ओ नन्हें से फरिश्ते...)

आ जाओ मेरी मैया, बिन माँझी के सहारे,
डूबेगी मेरा नैया, आ जाओ मेरी मैया।।टेर।।

बैठी हो आप ऐसे, सुनती नहीं हो जैसे,
नैया हमारी मैया, उतरेगी पार कैसे
तुझे क्या पता नहीं है, मझधार में पड़े हैं।।१।।

मेहनत से हमने अपनी, नैया है एक बनाई,
लेकिन भँवर में मैया कोशिश ना काम आई,
हारे है जब भी हम तो, तूफानों से लड़े हैं।।२।।

पतवार खेते-खेते आखिर मैं थक गया हूँ,
शायद तू आती होगी, कुछ देर रुक गया हूँ,
बनवारी बेवसी से, चुपचाप हम खड़े हैं।।३।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।
।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री दुर्गा वन्दना ।।

मेरी माँऽऽऽ-३
जोगी तेरे द्वार का, भूखा तेरे प्यार का,
दुनिया मुझे पत्थर पारे, पागल मुझे कहते सारे,
सुन ले पुकार माँऽऽऽ मेरी माँ।।टेर।।

सुनता हूँ ज्योतां वाली, महिमा तेरी भारी है,
एक इशारे पर तू, हरे विपदा सारी है,
आया मैं द्वारे तेरे, दुखड़े तूँ हरले मेरे ...
सुन ले...।।१।।

फटे हुये कपड़ें में, बन के फकीर आया,
रास्ते में खींचता तेरे नाम की लकीर आया,
पहुँचा में द्वारे तेरे, दुखड़े तूँ हरले मेरे...
सुन ले...।।२।।

तेरा दर छोड़ मैया, किस दर जाऊँ मैं,
किसको मैं जाके दिल की बतियाँ सुनाऊँ मैं,
सुनले ओ मैया मेरी, अब ना तूँ कर माँ देरी...
सुन ले...।।३।।

शेरों वाली मैया तेरी, महिमा बड़ी भारी है,
रोली को टीको थारे, मेहंदी लागे प्यारी है,
सिर पर माँ छत्र विराजे, हाथों में त्रिशुल साजे...
सुन ले...।।४।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री दुर्गा वन्दना ।।

(तर्ज : क्या मिलिये ऐसे लोगों से...)

जाने वाले एक संदेशा, मेरी माँ से कह देना,
एक दिवाना याद में रोये, उसको दर्शन दे देना।।टेर।।

जिसको मैया दर पे बुलाये, किस्मत वाले होते हैं,
जो मैया से मिल नहीं पाते, छुप छुप के वो रोते हैं,
जितनी परीक्षा मेरी ली है, और किसी की ना लेना।।१।।

तूने कौन सा काम किया है, दर पै तुझे बुलाया है,
मैनें कौन सा पाप किया है, दिल से मुझे भुलाया है,
एक बार मुझको दर पे बुलाले, इतनी कृपा कर देना।।२।।

मुझको तो विश्वास है दिल में, मेरा बुलावा आयेगा,
मईया जी का दर्शन करके, जीवन सफल हो जायेगा,
माँ से जाकर इतना कहना, मेरा भरोसा टूटे ना।।३।।

कैसी लगती है मेरी मैया, मुझको जरा बतावो ना,
शेरांवाली जी की महिमा, गाकर मुझे सुनावो ना,
बनवारी भक्तों की दुहाई, मेरी तरफ से दे देना।।४।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री दुर्गा वन्दना ।।

(तर्ज : जरा सामने तो आओ छलिये...)

जगदम्बे भवानी मैया तेरा त्रिभुवन में छाया राज है,
सोहे वेष कसुमलनी को, तेरे रत्नों का सिर पे ताज है ।।

जब-जब भीड़ पड़ी भक्तन पर, तब तब आय सहाय करे,
अधम उद्धारण तारण मैया, युग युग रुप अनेक धरे,
सिद्ध करती तू भक्तों के काज है, नाम तेरा गरीब नवाज है,
सोहे वेष कसुमल...।।१।।

जल पर थल और थल पर सृष्टि, अद्भुत थारी माया है,
सुर नर मुनिजन ध्यान धरे नित, पार नहीं कोई पाया है,
थारे हाथों में सेवक की लाज है, लियो शरणों तिहारों मैया आज है,
सोहे वेष कसुमल...।।२।।

जरा सामने तो आवो मैया, छुप छुप छलने में क्या राज है,
यूँ छुप ना सकोगी मेरी मैया, मेरी आत्मा की ये आवाज है,
मैं तुमको बुलाऊँ तुम नहीं आओ, ऐसा कभी ना हो सकता,
बालक अपनी मैया से बिछुड़कर, सुख से कभी ना सो सकता,
मेरी नैया पड़ी मझधार है, अब तू ही तो खेवनहार है,
आजा रो-रो पुकारे मेरी आत्मा, मेरी आत्मा की ये आवाज है,
जगदम्बे भवानी मैया...।।३।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री दुर्गा वन्दना ।।

(तर्ज : एक तेरा साथ हमको...)

दे दो थोड़ा प्यार मैया तेरा क्या घट जायेगा,
ये बालक माँ तर जायेगा।
छोड़ तेरा दरबार, मैया और कहाँ ये जायेगा,
ये बालक माँ तर जायेगा।।टेर ।।

है पुराना माँ, रिश्ता हमारा जो, उसे तुम याद करो,
एहसान कर दो माँ, बालक तुम्हारा हूँ, अब सिर पे हाथ धरो,
प्यार का रिश्ता हमारा टूटने ना पायेगा।।१।।

दे दिया तूने, सबको सहारा माँ, जो द्वारे आया है,
भर दिया दामन, सबका खुशी से माँ, जो अर्जी लाया है,
मुझको देने से खजाना कम नहीं हो जायेगा।।२।।

किश्ती हमारी माँ, तेरे हवाले है, उसे तुम पार करो,
गर दे दिया तूने, इसको किनारा माँ, तो ये विश्वास करो,
ये तेरा दरबार जय-जयकारों से गुंज जायेगा।।३।।

ये जिन्दगानी माँ, लिख दी है अब हमने, तुम्हारे नाम पे,
बालक तुम्हारा हूँ, भटकूँ कहाँ-२, तूं आके थाम ले,
भक्त ये एहसान तेरा भूलने ना पायेगा।।४।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री दुर्गा वन्दना ।।

(तर्ज : तुने मुझे बुलाया ...)

तूने मुझे बुलाया शेरांवाली ऐऽऽऽ
मैं आया मैं आया शेरांवाली ऐऽऽऽ
ओ ज्योतांवाली ऐ, पहड़ांवाली ऐ, ओ मेहरांवाली ऐ,
मैं आया मैं आया शेरांवाली ऐ...।।टेर ।।

सारा जग है एक बनजारा, सबकी मंजिल तेरा द्वारा,
ऊँचे पर्वत लम्बा रास्ता, ऊँचे पर्वत लम्बा रास्ता,
पर मैं रह ना पाया शेरांवाली ऐ... मै आया..।।१।।

सूने मन में जल गयी बाती, तेरे पथ में मिल गये साथी,
मुँह खोलूँ क्या तुझसे मांगूँ, मुँह खोलूँ क्या तुझसे मांगूँ,
बिन मांगे सब पाया शेरांवाली ऐ...मै आया..।।२।।

कौन है राजा कौन भिखारी, एक बराबर तेरे सारे पुजारी,
तूने सबको दर्शन देके, तूने सबको दर्शन देके,
अपने गले लगाया शेरांवाली ऐ...मै आया..।।३।।

प्रेम से बोलो जय माता की, सारे बोलो जय माता की,
आते बोलो जय माता की, जाते बोलो जय माता की।।

।।हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।।हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री दुर्गा वन्दना ।।

(तर्ज : एक प्यार का नगमा...)

कोहेनूर का जलवा है जन्नत का नजारा है,
कश्मीर की वादी में, शेरांवाली का द्वारा है।।टेर ।।

हर ओर पहाड़ों ने, डाला हुआ डेरा है,
हर जगह बहारों ने, फूलों को बिखेरा है,
भगवान ने धरती पर, इक स्वर्ग उतारा है,
कश्मीर की वादी में...मेरी मैया का द्वारा है।।१।।

है केन्द्र तपस्या का, ऋषियों की वो धरती है,
इस धरती की कुदरत भी अराधना करती है,
कोई पुण्य का सागर है, मुक्ति का द्वारा है,
कश्मीर की वादी में...अम्बे रानी का द्वारा है।।२।।

माँ के उस द्वारे की, महिमा ही निराली है,
खाली न कभी जाये, आता जो सवाली है,
ममता के सरोवर की, अनमोल ये धारा है,
कश्मीर की वादी में....शेरोंवाली का द्वारा है।।३।।

हर समय छलकते हैं, यहाँ प्यार के पैमाने,
और गीत ये गाते हैं, हर ताल पे दिवाने,
हम इसको सदा पूजें, यही धर्म हमारा है,
कश्मीर की वादी में... मेरी मैया का द्वारा है।।४।।

।। श्री दुर्गा वन्दना ।।

तुम्हीं मेरी मइया, तुम्हीं दुर्गे रानी,
तुम्हीं प्रेरणा हो, तुम्हीं प्रेरणा हो,
कुछ तो बता दो, मेरी माँ भवानी,
छुपी तुम कहाँ हो, छुपी तुम कहाँ हो।।टेर ।।

तुम्हीं मेरे नैनों की, ज्योति हो मैया,
तुम्हीं मेरी नैया, तुम्हीं हो खेवैया,
मैं काठ की एक, नन्ही सी पुतली,
तुम्हीं प्राण मेरे, तुम्हीं चेतना हो।।
तुम्हीं मेरी..।।१।।

तुम्हीं जिन्दगी माँ, तुम्हीं दिल की धड़कन,
तुम्हीं साज मैया, तुम्हीं स्वर की सरगम,
तुम्हीं तो बसी हो, भजनों में मेरे,
संगीत तुम हो, तुम्हीं वन्दना हो।।
तुम्हीं मेरी..।।२।

खिले फूल दिल के जो, तुम मुस्करा दो,
आ जाये निंदिया जो, लोरी सुना दो,
एक बार मैया, जरा मुझसे कह दो,
बेटी हो मेरी, तुम्हीं आत्मा हो।।
तुम्हीं मेरी..।।३।।

।।हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।
।।हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री दुर्गा वन्दना ।।

मेरे सिर पे सदा तेरा हाथ रहे,
शेरावाली माँ हमेशा मेरे साथ रहे,
मेरे साथ रहे-२, मेहरावाली माँ हमेशा मेरे साथ रहे।।

मैं ते जन्मों से तेरा दिवाना हूँ,
तेरी कृपा से मैं अन्जाना हूँ,
मेरी झोली में, तेरी सौगात रहे
...शेरावाली माँ।।१।।

तेरी कृपा जो मुझपे हो जायेगी,
मेरे पापों को मैया धो जायेगी,
तेरे छोटे से दिवाने की ये बात रहे
...शेरावाली माँ।।२।।

मेरी मुश्किल का हल हो जायेगा,
मेरा जीवन सफल हो जायेगा,
हर्ष अपनी यूँ होती मुलाकात रहे
...शेरावाली माँ।।३।।

।। श्री दुर्गा वन्दना ।।

हे नाम रे..सबसे बड़ा तेरा नाम,
ओ शेरावाली, ऊँचे डेरावाली बिगड़ी बना दे
मेरे का, ओ नाम रे...।।टेर।।

ऐसा कठिन पल, ऐसी घड़ी है, विपदा आन पड़ी है,
तू ही दिखा अब, रस्था ये दुनिया, रस्ता रोके खड़ी है,
मेरा जीवन बना इक संग्राम, ओ शेरावाली...।।१।।

भक्तों को दुष्टों से बचाये, बुजती ज्योत जलाये,
जिसका नहीं है कोई जहाँ में तु उसकी बन जाये,
तीनो लोक करे तेरा गुणगान, ओ शेरावाली...।।२।।

है तू ही देनेवाली माता, तू ही लेने वाली,
तेरी जै-जैकार करे माँ, भर दे झोली खाली,
काम सफल हो जाये मेरा, दे ऐसा वरदान,
तेरे बल से हो जाये माँ, निर्बल भी बलवाना,
किसकी बली चढ़ाऊँ तुझको, जो तू खुश हो जाये,
दुश्मन थर-थर काँपे माँ, जब तू गुस्से में आये, ओ शेरावाली।।३।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री दुर्गा वन्दना ।।

भावना की ज्योत को जगाके देखिये,
बोलती है मूर्ति, बुलाके देखिये,
सौ बार चाहे आजमा के देखिये,
बोलती है मूर्ति, बुलाके देखिये।।टेर।।

करोगे जो सवा तो जबाब मिलेगा,
यहाँ पुण्य-पाप का हिसाब मिलेगा
भले-बुरे सबको पहचानती है माँ,
खरी - खोटी सबकी ही जानती है माँ,
श्रद्धा से इसको बुलाके देखिये....।।१।।

छाया में है छुपी वो बैठी धूप में,
इसका मिलता है दर्शन, किसी भी रुप में।
होगा हर जगह अहसास उसका,
तेरे विश्वास में विश्वास उसका,
जिस ओर नजर घुमाके देखिये...।।२।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री दुर्गा वन्दना ।।

मेरा आप की कृपा से हर काम हो रहा है,
करती है मेरी मईया, मेरा नाम हो रहा है।।टेर।।

मेरी जिन्दगी में तू है, मेरे पास क्या कमी है,
मुझे और अब किसी की दरकार भी नहीं है,
बस होता रहे हमेशा, जो कुछ भी हो रहा है।
करती है मेरी...।।१।।

करता नहीं मैं फिर भी, हर काम हो रहा है,
मैया तेरी बदौलत, आराम हो रहा है,
मुझे ये भी पता नहीं है, ये क्या हो रहा है।।
करती है मेरी...।।२।।

पतवार के बिना ही, मेरी नाव चल रही है,
बनवारी बिन मांगे ही, हर चीज मिल रही है,
मर्जी है तेरी मैया, अच्छा ही हो रहा है।।
करती है मेरी...।।३।।

।। श्री दुर्गा वन्दना ।।

(तर्ज : मिलती है जिन्दगी में...)

मैया का नाम लेकर, सब काम कीजिये,
खुद ही सम्भालेगी तुम्हें, विश्वास कीजिये।।टेर।।

बेकार दौड़ना है, दुनिया की दौड़ में,
नाकाम उसकी जिन्दगी, भटके जो होड़ मे,
सबका भला हो आपसे, उपाय कीजिये।।१।।

ऐसा है द्वार मात का, पापी भी तर गये,
जिसके न पास कुछ भी था, भण्डार भर गये,
करके भरोसा मात का, दो नाम लिजीये।।२।

मैया के घर में देर है, अन्धेर नहीं है,
इसकी नजर में एक है सब, भेद नहीं है,
मैया सुनेगी आपकी, फरियाद कीजिये।।३।।

नफरत जहर का रुप है, अमृत है प्यार में,
अमृत ही बँट रहा है, दादी के द्वार में,
समझो जो पार होना, अमृत ही पीजिये।।४।।

झून्झूनवाली मात को, दिल मैं बैठाईये,
घर-घर में माँ के नाम की ज्योति जगाईये,
बनवारी जिन्दगी को, साकार कीजिये....।।५।।

।। श्री दुर्गा वन्दना ।।

(तर्ज : गाड़ी वाले मने बिठाले...)

नाचो गाओ खुशी मनाओ, झूमो रे सब आज
दादी आई रे....
आई रे दादी आई रे, भक्ताँ र घर आई रे
नाचो गाओ खुशी...।।टेर।।

झुंझणू वाली दादी माँ, सिंह पर चढ़कर आई है,
सिंह पर चढ़कर आई माँ, रुप अनेकों बनाई है,
महिमा भारी, लीला न्यारी, कलयुग की अवतार।।
दादी आई रे...।।१।।

(तर्ज : ओल्यूँ)

ओ जी ओ दादीजी म्हारी झूंझनू की,
थारे भक्तां न थारी ओल्यूँ, आवे जी दादी।।टेर।।
सिर पर तारा चुनड़िया तारां की, माथे बोरलो न्यारो है,
गले बीच हार है हीरा को, लागे सब न प्यारो है,
कानां कुण्डल रंग बिरंगा, गल फूलां री माल।।
दादी आई रे...।।२।।

कुण सिणगारयो, यो कुण सिणगारयो,
दादी न बनड़ी बणा दियो, यो कुण सिणगरयो।।टेर।।
लाल चुड़लो हाथाँ म, मेहंदी लाल रचाई है,
हीरा जड़ी नथ अति प्यारी, माथे पे बिन्दिया लगाई है,
झनझन करती पायल बाजे, देखो हर्ष अपार।।
दादी आई रे...।।३।।

॥ श्री शिव वन्दना ॥

(तर्ज : तुम्ही हो माता-पिता तुम्हीं हो..)

है नाम ये जो प्रभु से मिलाये,
नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय।।टेर।।

नमः शिवाय हर मन को भाये,
जो भी सुने वो वही रुक जाये,
तन मन लगा कर वो भी पुकारे,
नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय।।१।।

महामंत्र है वेद बताये,
जो कोई सुमिरे वही तर जाये,
भोले शंकर को पल में बुलाये,
नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय।।२।।

डमरु भी बोले नमः शिवाय,
नंदी भी बोले नमः शिवाय,
भक्तों के संग में बोले गजानन,
नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय।।३।।

अर्जी यही है गाते ही जायें,
सुख हो या दुख में भूल न पायें,
ये सारे बालक शरण में आये,
नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय।।४।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री शिव वन्दना ।।

फरियाद मेरी सुनके, भोलेनाथ चले आना,
नित ध्यान धरूँ तेरा बिगड़ी को बना जाना।।टेर।।

तुझे अपना समझकर मैं, फरियाद सुनाता हूँ,
तेरे दर पर आकर मैं, नित धूनि रमाता हूँ,
क्यों भूल गये भगवन, मुझे समझ के बेगाना,
फरियाद मेरी सुनके...।।१।।

मेरी नाँव भँवर डोले, तुम ही तो खेवैया हो,
जग के रखवाले तुम, तुम ही तो कन्हैया हो,
कर बैल सवारी तुम, भवपार लगा जाना,
फरियाद मेरी सुनके...।।२।।

तुम बिन न कोई मेरा, अब नाथ सहारा है,
इस जीवन को मैंने, तुझ पर ही वारा है,
अर्जी है मेरी बाबा, मुझको भूल तू ना जाना,
फरियाद मेरी सुनके...।।३।।

नैनों में भरे आँसू, क्यों तरस न खाता है,
क्या दोष हुआ मुझ से, मुझे क्यों ठुकराता है,
अब म्हैर करो बाबा, सुनके मेरा अफसाना,
फरियाद मेरी सुनके... ।।४।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री शिव वन्दना ।।

(तर्ज : बचपन की मोहब्बत को..)

शिव डमरु वाले को दिल से न भुलाना तू,
शंकर त्रिपुरारी की, नित आरती गाना तू।।टेर।।

शिव-शिव कह के प्राणी, जीने का मजा ले ले,
मालूम नहीं कब तू दुनिया से रजा लेले,
भोले भण्डारी को, निज हाल सुनान तू,
शंकर त्रिपुरारी की...।।१।।

किस्मत के भरोसे पे, कर्मों को किये जा तू,
दो दीन की रवानी है, हँस हँस के जिये जा तू,
दुनिया के दिवानों का, कुछ खौफ न खाना तू,
शंकर त्रिपुरारी की...।।२।।

पीकर के जहर शिव ने,अमृत को विसारा था,
कर जोड़ के देवों ने, शंकर को पुकारा था,
शिवचरण के पानी को, आँखो से लगाना तू,
शंकर त्रिपुरारी की...।।३।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री शिव वन्दना ।।

शंकर दया है बांटते, दातार की तरह।
लेकिन तुम्हारा प्यार भी, हो प्यार की तरह।।टेर।।

ओढ़े है मृग की छाल, तिलक सोहे चन्द्रभाल,
लिपटे गले में सर्प है, सब हार की तरह।।१।।

गंगा जटा से बह रही, उनके हैं तीन लोक,
संग उनके भूत प्रेत हैं, परिवार की तरह।।२।।

कौड़ी नहीं खजाने में, माना कि एक भी,
है धन मगर दया का, अम्बार की तरह।।३।।

मुक्ति जो चाहते हो तुम, काशी चलो जरा,
क्योंकि वहाँ भी है वही, सरकार की तरह।।४।।

।। श्री शिव वन्दना ।।

(तर्ज : ऐ मेरे दिले नादान...)

मुझे ऐसा वर दे दो, गुणगान करूँ तेरा,
इस बालक के सिर पे, प्रभु हाथ रहे तेरा।।टेर।।

सेवा नित तेरी करूँ, तेरे द्वार पे आऊँ मैं,
चरणों की धूली को, मेरे माथे लगाऊँ मैं,
चरणामृत पाकर के, नित कर्म करूँ मेरा।।१।।

भक्ति और शक्ति दो, अज्ञान को दूर करो,
अरदास करूँ भगवन, अभिमान को चूर करो,
नहीं द्वेष रहे मन में, हो बास प्रभु तेरा।।२।।

विश्वास हो ये मन में, तुम साथ ही हो मेरे,
तेरे ध्यान में सोऊँ मैं, स्वप्नों में मिलो मेरे,
चरणों से लिपट जाऊँ, तुम ख्याल करो मेरा।।३।।

इक आस यही मेरी, तुम दर्शन देते रहो,
हे दीन बन्धु मेरी तुम, खबर भी लेते रहो,
मेरे होठों पर भगवन्, रहे नाम सदा तेरा।।४।।

मेरी यश और कीर्ति को, प्रभु मुझसे दूर रखो,
इस मन मन्दिर में तेरी, भक्ति भरपूर रखो,
तेरी ज्योति जगे तन में, हो नाम प्रभु तेरा।।५।।

।।हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री शिव वन्दना ।।

(तर्ज : संसार है इक नदियाँ..)

बम-बम भोले शंकर, तेरे द्वार पे आये हैं,
तेरे शीश चढ़ाने को, गंगाजल लाये हैं।।
बम-बम भोले शंकर.....।।टेर।।

तेरे मस्तक पे चन्दा, तू डमरूवाला है,
तेरे हाथ त्रिशूल सोहे, गल सर्पों की माला है,
काशी है धाम तेरा, तेरी आश लगाये हैं।
बम-बमब भोले शंकर...।।१।।

तू अंग विभूति रमाये, और भांग धतूरा खाये,
जो भी तेरे दर पे आया, वो खाली हाथ न जाय,
बड़ी दूर से चल करके, तुझे कावड़ चढ़ाये हैं।
बम-बमब भोले शंकर...।।२।।

हो जग के स्वामी तुम, तेरी लीला न्यारी है,
बाघम्बर धारी हो, संग गिरिजा प्यारी है,
बाबा तुझे रिझाने को, हम भजन सुनाए हैं।
बम-बमब भोले शंकर...।।३।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री शिव वन्दना ।।

एक दिन वो भोला भण्डारी, बन करके बृजनारी,
गोकुल में आ गये हैं,
पार्वती भी मना के हारी, ना माने त्रिपुरारी,
गोकुल में आ गये हैं.....।।टेर।।

पार्वती से बोले, मैं भी चलूँगा तेरे संग में,
राधा संग श्याम नाचे, मैं भी नाचूँगा तेरे संग में,
रास रचेगा बृज में भारी, मुझे दिखाओ प्यारी।। गोकुल में
ओ मेरे भोले स्वामी, कैसे लै जाऊँ मेरे साथ में,
मोहन के सिवा वहाँ, कोई पुरुष ना जाये रास में,
हँसी करेगी बृज की नारी, मानो बात हमारी।। गोकुल में
ऐसा बना दो मुझे, कोई न जाने इस राज को,
मैं हूँ सहेली तेरी, ऐसा बताना बृजराज को,
बाँध के जूड़ा, पहन के साड़ी, चाल चले मतवाली।।गोकुल में
हँस के सती ने कहा, बलिहारी जाऊँ इस रुप पे,
एक दिन तुम्हारे लिये, आए मुरारी इस रुप में,
मोहनी रुप बनाया मुरारी, अब ये तुम्हारी बारी।।गोकुल में
देखा मोहन ने, समझ गये वो सब बात रे,
ऐसी बजायी बंशी, सुद बुध भूले भोले नाथ रे,
सर से खिसक गयी जब साड़ी, मुस्काये गिरधारी।।गोकुल में
दीन दयालु तेरा, तब से गोपेश्वर हुआ नाम रे,
ओ भोले बाबा तेरा, वृन्दावन में बना धाम रे,
ताराचन्द कहे हे त्रिपुरारी, रखियो लाज हमारी।।गोकुल में

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री शिव वन्दना ।।

तेरे ख्यालो में खोया रहूं, मैं जागू दिन और रात
आओऽऽ आ जाओ भोलेनाथ।।टेर।।

हे शिव शंकर हे प्रलयंकर,
हो जग के रखवाले,
तेरे बिना मेरी कौन सुनेगा,
दर्दे दिल की बात।।१।।

मन पंछी बैचेन दरश बिन,
अब तो दरश दिखाओ,
अँखियाँ ऐसे बरस रही है,
सावन की बरसात।।२।।

विष पिये खुद अमृत बाँटे,
तुम सम कोई ना दानी
'रामा' दया की भिक्षा माँगे,
रख दो सर का पे हाथ।।३।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री शिव वन्दना ।।

(तर्ज : कहीं दीप जले कहीं..)

हरि ॐ नमः शिवाय हरि ॐ हरि ॐ...।।टेर।।

तेरे जटा में गंग बिराजे माथे पे चन्दा साजे,
और डम डम डमरु बजाये।।
हरि ॐ...।।१।।

तेरी लीला सबसे न्यारी, जिसे जाने दुनिया सारी,
तेरी महिमा वरनी न जाये।।
हरि ॐ...।।२।।

ओ अंग विभूति रमाये, नित भांग धतूरा खाये,
श्रीराम का ध्यान लगाये।।
हरि ॐ...।।३।।

ये पवन तेरा गुण गाये, तेरे चरणों में शीश नवाये,
गुणगान करे चित लाये।।
हरि ॐ...।।४।।

॥ श्री हनुमान वन्दना ॥

(तर्ज : मारवाड़ी...)

अंजणी को लाल निरालो रे अंजनी को।।टेर।।

घुंघरु बाँध बाबो छम छम नाचे,
लाल लंगोटे वालो रे, अंजनी को।।१।।

रोम-रोम में राम रमैया,
राम नाम मतवारो रे, अंजनी को।।२।।

भीड़ पड़याँ बाबा दौड़यो दौड़यो आवै,
भक्ताँ को रखवालो रे, अंजनी को।।३।।

रामवतार राम भज प्यारे,
तू भजले बजरंग बालो रे, अंजनी को।।४।।

।।हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री हनुमान वन्दना ।।

छम-छम-छम, छम-छम-छम, छम-छम-छम,
छणण, छणण, छणणण, छणणणओऽऽऽ
घुँघरुँ छम-छमा-छम णणण छणण बाजे रे,
राम नाम धुन रट-रट-रट बजरंगी नाचे रे,
बजरंगी नाचे रे, घुघरिया बाजे रे-२।।टेर।।

चारो धामा रो रखवालो, यो सालासर धाम,
जब भी पड़े भगतां पर, यो ही सारे काम,
घुँघरुँ छम-छमा-छम...।।१।।

दुष्ट दलन हनुमान गदाधर है वीरां रो वीर,
जीण पर नजर कर उनरी, पल में बदल तकदीर,
घुँघरुँ छम-छमा-छम...।।२।।

सवामणि रो भोग भरया, बाबो भर देव भण्डार,
बड़ो दयालु दाता इणरी, महिमा अपरम्पार,
घुँघरुँ छम-छमा-छम...।।३।।

॥ श्री हनुमान वन्दना ॥

हे दुखभंजन मारुति नंदन,
सुन लो मेरी पुकार, पवनसुन विनती बारम्बार।।टेर।।

अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता,
दुखियों के तुम भाग्य विधाता,
सियाराम के काज सँवारे,
मेरा करो उद्धार।।पवनसुत...।।१।।

अपरम्पार है शक्ति तुम्हारी,
तुम पर रीझे अवध बिहारी,
भक्ति भाव से ध्याऊँ तोहे,
कर दुखों से पार।।पवनसुत...।।२।।

जपूँ निरन्तर नाम तिहारा,
अब नहीं छोडूँ तेरा द्वारा,
राम भक्त मोहे शरण में लीजे,
कर भवसागर पार।।पवनसुत...।।३।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री हनुमान वन्दना ।।

राम से बड़ा राम का नाम-२।।टेर।।

सुमरिये रामरुप बिन देखे, इसमें लगे ना कौड़ी दाम,
नाम की डोरी से बन्ध करके आयेंगे श्रीराम।।
राम से बड़ा राम का...।।१।।

नामी को चिन्ता ये रहती नाम न हो बदनाम,
द्रोपदी ने जब नाम पुकारा, झट आये घनश्याम।।
राम से बड़ा राम का...।।२।।

बिना सेतु के सागर को भी लाँघ सके ना राम,
लाँघ गये हनुमान उसी को लेके राम का नाम।।
राम से बड़ा राम ...।।३।।

वो अभिमानी डूब जायेंगे, जो मुख नहीं है राम,
वो पत्थर भी तर जायेंगे, लिखा है जिनपे राम।।
राम से बड़ा राम का...।।४।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री हनुमान वन्दना ।।

(तर्ज : वारी जाऊ चिरमी न...)

लाल लंगोटो हाथ म घोटो, थारी जय हो पवन कुमार,
वारी जाऊँ बालाजी।।टेर।।

सालासर थारो देवरों, मेहंदीपुर भी देवरों,
थारै नौबत बाजे द्वार।। वारी जाऊँ...।।१।।

चैत सुदी पून्यू को मेलो,
थारै आवै भगत अपार।। वारी जाऊँ...।।२।।

गठ जोड़ा की जात जडूला,
देव लाखों ही नर नार।। वारी जाऊँ...।।३।।

ध्वजा नारियल चढ़े चूरमों,
सिर पे छत्तर हजार।। वारी जाऊँ...।।४।।

घर-घर म थारी जोत जगै है,
सब भगत करै जय जयकार।। वारी जाऊँ...।।५।।

घृत सिन्दूर चढ़ाव थारे,
कोई मंगल और शनिवार।। वारी जाऊँ...।।६।।

भगतां का थे कारज सारो,
थारी महिमा अपरम्पार।। वारी जाऊँ...।।७।।

ताराचन्द की विनती बाबा,
म्हारो बेड़ो लगा दिज्यो पार।। वारी जाऊँ...।।८।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री हनुमान वन्दना ।।

(तर्ज : ऐ मेरे दिले नादान..)

ना स्वर है ना सरगम है, ना लय ना तराना है,
हनुमान के चरणों में, एक फूल चढ़ाना है।
बजरंग के चरणों मे, एक फूल चढ़ाना है।।टेर।।

तुम बाल समय में प्रभु, सूरज को निगल डाले,
अभिमानी सुरपति के, सब दर्प मसल डाले,
बजरंग हुये जबसे, संसार ने माना है।।
ना स्वर है न...।।१।।

सब दुर्ग ढहा करके, लंका को जलाये तुम,
सीता की खबर लाये, लक्ष्मण को बचाये तुम,
प्रिय भरत सरिस तुमको, सियाराम ने माना है।।
ना स्वर है न...।।२।।

जब राम नाम तुमने, पाया न नगीने में,
तुम फाड़ दिये सीना, सीया राम थे सीने में,
विस्मित जग ने देखा, कपि राम का दिवाना है।।
ना स्वर है न...।।३।।

हे अजर अमर स्वामी, तुम हो अन्तरयामी,
मैं दीन हीन चंचल, अभिमानी अज्ञानी,
जब तुमने नजर फेरी, मेरा कौन ठिकाना है।।
ना स्वर है न...।।४।।

।।हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री हनुमान वन्दना ।।

रखवाला प्रतिपाला, मेरा लाल लंगोटे वाला,
कदम-कदम पर रक्षा करता, घर-घर करे उजाला-२।।टेर।।

निश दिन इसका ध्यान लगाऊँ, जपूँ इसी की माला,
धूप दीप नयी ज्योति जलाऊँ, पड़े न यम से पाला रे पाला।।

मन मन्दिर में वास करो तुम, हे अंजनी सुत लाला,
पापों को मेरे नाश करो तुम, बनकर दीन दयाला-दयाला।।

लाल सूरत मेरे मनको मोहे, शीश मुकुट बहु प्यारा,
कानन कुण्डल तिलक विशाला, गल मोतियन की माला रे माला।।

राम सिया थारे उर में सोहे, अजर अमर थारी माया,
घर-घर होवे पूजा थारी, सिया सुधि लाने वाला रे वाला।।

लक्ष्मण मूर्छित पड़े धरणी पर, वैद्य बुलाकर लाया,
आज्ञा पा संजीवन लाने, पवन वेग से चाल्या रे चाल्या।।

लक्ष्मणजी के प्राण बचाये, पहाड़ उखाड़ के लाये,
राम प्रभु को धीरज दीना, भाई से भाई को मिलाया रे मिलाय।।

नेम नियम से जो कोई ध्यावे, मन की मुरादें पावे
बिछड़े साथी फिर से मिलाकर, घर-घर प्रेम बढ़ाया रे बढ़ाया।।

।। श्री हनुमान वन्दना ।।

बजरंग बाला, जपुँ थारी माला,
रामदूत हनुमान, भरोसो भारी है।।टेर।।

लाल लंगोटे वालो तूँ, अंजनी माँ को लालो तूँ,
राम नाम मतवालो तूँ, भक्ताँ को रखवालो तूँ,
मेहन्दीपुर तेरा भवन बण्या है, सुनले पवनकुमार।।भरोसो.

शक्ति लक्ष्मण के लागी, पल माही मुर्छा आगी,
द्रोण गिरी पर्वत ल्यायो, सांचो है तूँ अनुरागी,
घोल संजीवन लखन पिलाए, जागे वीर महान।।भरोसो..

तूने लंका जारी रे, मारे अत्याचारी रे,
हुक्म की ताबेदारी रे, बाल जति ब्रह्मचारी रे,
अहिरावण की भूजा उखाड़ी, ल्यायो तूँ भगवान।।भरोसो..

बड़े-बड़े कारज सारे, दुष्टों को दलने वाले,
सच्ची भक्ति के बल से, घट में राम दिखा डाले,
चीर कलेजा तूँ दिखलाया, मगन भये भगवान।।भरोसो..

बल को तेरा पार नहीं, ना तुझसो दिलदार कोई,
शंकर को अवतार तूँ ही, साँचो हिम्मतदार तूँ ही,
शरण पड़े को आन उबारो, सेवक करे पुकार।।भरोसो...

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री हनुमान वन्दना ।।

छम छम नाचे देखो वीर हनुमाना,
कहते है लोग इसे राम का दिवाना।।टेर।।

पावों में घूंघरु बाँध के नाचे,
रामजी का नाम इसे प्यारा लागे,
राम ने भी देखो इसे SSS खुब पहचाना।।
छम छम...।।१।।

जहाँ जहाँ कीर्तन होता श्री राम का,
लगता है पहरा वहाँ वीर हनुमान का,
राम की चरण में है SSS, इनका ठिकाना।।
छम छम...।।२।।

नाच नाच देखो श्री राम को रिझाये,
बनवारी रात दिन नाचता ही जाये,
भक्तों में भक्त बड़ाSSS, दुनिया ने माना।।
छम छम...।।३।।

|| निर्गुण भजन ||

मात पिता गुरु प्रभु चरणों में प्रणवत बारम्बार,
हम पर किया बड़ा उपकार-२ ||टेर||

माता ने जो कष्ट उठाया, वह ऋण जाये ना कभी चुकाया,
अंगुली पकड़ कर चलना सिखाया, ममता की दी शीतल छाया,
जिनकी गोद में पल कर हम कहलाते हैं होशियार ||१||

पिता ने हमको योग्य बनाया, कमा कमा कर अन्न खिलाया,
पढ़ा लिखा गुणवान बनाया, जीवन पथ पर चलना सिखाया,
जोड़-जोड़ अपनी संपत्ति का बना दिया हकदार ||२||

तत्व ज्ञान गुरु ने बतलाया, अंधकार सब दूर भगाया,
हृदय में भक्ति दीप जलाकर, हरि दर्शन का मार्ग बतलाया,
बिन स्वार्थ ही कृपा करे ये कितने बड़े है उदार ||३||

प्रभु कृपा से नर तन पाया, संत मिलन का साज-सजाया,
बल बुद्धि और विद्या देकर, सब जीवों में श्रेष्ठ बनाया,
जो भी इनकी शरण में आता, कर देता उद्धार ||४||

|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ||

|| निर्गुण भजन ||

मैली चादर ओढ़ के कैसे, द्वार तिहारे आऊँ
हे पावन परमेश्वर मेरे, मन ही मन शरमाऊँ
मैली चादर ओढ़ के.....

तुने मुझको जग में भेजा, देकर निर्मल काया
आकर के संसार में मैंने, इसमे दाग लगाया
जनम जनम की मैली चादर, कैसे दाग छुड़ाऊँ
मैली चादर ओढ़ के....

इन पैरों से चलकर तेरे, द्वार कभी ना आया
जहाँ जहाँ हो पूजा तेरी, कभी न शीश नवाया
हे हरिहर मैं हार के आया, अब क्या हार चढ़ाऊँ
मैली चादर ओढ़ के.....

निर्मल वाणी पाकर तुझसे, गीत तेरे न गाया
नैन मूँदकर हे परमेश्वर, कभी ना ध्यान लगाया
मन वीणा के तार है टूटे, अब क्या गीत सुनाऊँ
मैली चादर ओढ़ के....

।। निर्गुण भजन ।।

भाव का भूखा हूँ मैं और भाव ही बस सार है
भाव से मुझको भजे तो भव से बेड़ा पार है

अन्न-धन और वस्त्राभूषण, कुछ न मुझको चाहिये
आप हो जायें मेरे, पूरन मेरा सत्कार है...

भाव बिन सब कुछ दे डाले, तो भी मैं लेता नहीं
भाव से एक पुष्प भी दे तो मुझे स्वीकार है...

भाव से सूनी पुकारे, मैं कभी सुनता नहीं
भाव पूरण टेर ही करता मुझे लाचार है...

भाव जिस जन में नहीं उनकी मुझे चिन्ता नहीं
भाव वाले भक्त का भरपूर मुझ पर भार है...

बाँध लेते हैं मुझे प्रेमी ये दृढ़ जंजीर से
इसलिये इस भूमि पर होता मेरा अवतार है...

।। निर्गुण भजन ।।

भला करो भगवान, सबका भला करो,
दाता दया निधान, सबका भला करो,
भला करो - भला करो।।टेर।।

तुम्ही हो माता-पिता हमारे,
ये जग चलता तेरे सहारे,
हम तेरी संतान.... सबका भला करो।।१।।

तुम दुनिया का प्रितम प्यारा,
सबसे ऊँचा सबसे न्यारा,
सकल गुणों की खान....सबका भला करो।।२।।

तू सबका है पालनहारा,
सबको मिलता तेरा सहारा,
हे जगदीश महान....सबका भला करो।।३।।

भर दो सबकी झोलियां दाता,
तू है सबका भाग्य विधाता,
दो सबको वरदान...सबका भला करो।।४।।

।। निर्गुण भजन ।।

तोरा मन दर्पण कहलाये,
भले बुरे सारे कर्मों को देखे और दिखाये।।टेर।।

मन ही देवता, मन ही ईश्वर, मन से बड़ा ना कोय,
मन उजियारा, जब-जब फैले, जग उजियारा होय,
इस उजले दर्पण पर प्राणी, धूल न जमने पाय।।१।।

सुख की कलियाँ, दुख के काँटे, मन सब का आधार,
मन से कोई, बात छुपे न, मन के नयन हजार,
जग से चाहे, भाग ले कोई, मन से भाग न पाये।।२।।

तन की दौलत, ढलती छाया, मन का धन अनमोल,
तन के कारण, मन के धन को, मत माटी में घोल,
मन की कद्र, भुलाने वाले, हीरा जन्म गंवाये।।३।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। निर्गुण भजन ।।

(तर्ज : तुम अगर साथ देने का वादा करो...)

कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं,
बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा,
कभी गिरते हुए को उठाया नहीं,
बाद आँसू बहाने से क्या फायदा।।टेर।।

मैं तो मंदिर गया, पूजा आरती की,
पूजा करते हुए ये ख्याल आ गया,
कभी माँ बाप की सेवा की ही नहीं,
फिर पूजा के करने से क्या फायदा।।
कभी प्यासे...।।१।।

मैं तो काशी बनारस, हरिद्वार गया,
गंगा नहाते हुए ये ख्याल आ गया,
तन को धोया, मगर मन को धोया नहीं,
फिर गंगा नहाने से क्या फायदा।।
कभी प्यासे...।।२।।

मैंने दान किया, मैंने जप तप किया-२,
दान करते हुए ये ख्याल आ गया,
कभी भूखे को भोजन कराया नहीं,
दान लाखों का करने से क्या फायदा।।
कभी प्यासे...।।३।।

।। निर्गुण भजन ।।

विपदा की घड़ियों, जब मन घबराता है,
तेरे नाम का सुमिरन, मुझे धीर बँधाता है।।टेर।।

मतलब की दुनिया में, स्वारथ की प्रीति है,
गिरगिट के जैसी, ये रंग बदलती है,
सच्चा साथी बनकर, तू साथ निभाता है।।१।।

अपने भक्तों को तू दुःख में तपाता है,
दुख में तप कर वो कुंदन बन जाता है,
ऐसे भक्तों को तू अपना बनाता है।।२।।

हिम्मत बढ़ जाती है, तूफां से लड़ने की,
आशा बँध जाती है, खुशियाँ मिलने की,
नामुमकिन भी मुमकिन, पल में बन जाता है।।३।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। निर्गुण भजन ।।

इस योग्य हम कहाँ है, भगवन तुम्हें मनाये,
फिर भी मना रेह हैं, शायद तू मान जाये।।टेर।।

जब से जनम लिया है, विषयों ने हमको घेरा,
ईर्ष्या और वासना ने, किया है मन में डेरा,
सद्बुद्धि को अहम ने, हरदम रखा दबाये।।१।।

जग में जहाँ भी देखा, बस एक ही चलन है,
एक दूसरे के सुख से, खुद को बड़ी जलन है,
कर्मों का लेखा जोखा, कोई समझ न पाये।।२।।

जब कुछ न कर सके तो, तेरी शरण में आये,
अपराध मानते हैं, झेलेंगे सब सजायें,
बस दरश तू दिखा दे, कुछ और हम न चाहे।।३।।

निश्चय ही हम पतित हैं, लोभी हैं स्वार्थी हैं,
तेरा नाम जब पुकारे, माया पुकारती है,
सुख भोगने की इच्छा, कभी तृप्त हो न पाये।।४।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। निर्गुण भजन ।।

दशा मुझ दीन की भगवन सम्भालोगे तो क्या होगा
अगर चरणों की सेवा में, लगा लोगे तो क्या होगा

मैं नामी पातकी हूँ और, नामी पाप हर तुम हो
जो लज्जा दोनों नामों की, निभा लोगे तो क्या होगा
दशा मुझ .....

जिन्होनें तुमको करुणा कर, पतित पावन बनाया है
उन्ही पतितों को तुम पावन, बना लोगे तो क्या होगा
दशा मुझ .....

यहाँ सब मुझसे कहते हैं, तू मेरा है तू मेरा है
मैं किसका हूँ ये झगड़ा तुम, चुका लोगे तो क्या होगा
दशा मुझ .....

अजामील गीध गज गणिका, दया गंगा में बहते हैं
उसी में 'बिन्दु' सा पापी, मिला लोगे तो क्या होगा
दशा मुझ .....

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। निर्गुण भजन ।।

शेर : जुबां पर घबराकर जब कभी तेरा नाम आता है।
सुना है तेरी रहमत का सहारा काम आता है।।

तुम हमारे थे प्रभु जी तुम हमारे हो,
तुम हमारे ही रहोगे ओ मेरे प्रियतम,
हम तुम्हारे थे प्रभुजी हम तुम्हारे हैं,
हम तुम्हारे ही रहेंगे ओ मेरे प्रियतम।।टेर।।

तुम्हें छोड़ सुन नंददुलारे कोई न मीत हमारो,
किसके द्वारे जाय पुकारे और न कोई सहारो,
अब तो आके बाँह पकड़ लो ओ मेरे प्रियतम।।१।

तेरे कारण सब जग छोड़ा, तुम संग नाता जोड़ा,
एक बार प्रभु हँस कर कह दो, तू मेरा मैं तेरा,
साँची प्रीत की रीत निभा दो, ओ मेरे प्रियतम।।२।।

दासी की विनती सुन लीजो, वो वृज राज दुलारे,
आखिरी आश यही जीवन की, पूरण करना प्यारे,
एक बार हृदय से लगाओ ओ मेरे प्रियतम।।३।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।
।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। निर्गुण भजन ।।

लागी लगन मत तोड़नां,
प्रभुजी मेरी लागी लगन मत तोड़ना।।टेर।।

गहरी नदिया नाव पुरानी,
बीच भंवर मत छोड़ना।।
प्रभुजी...।।१।।

तेरे भरोसे मैने खेती बुआई,
मेरे भरोसे मत छोड़ना।।
प्रभुजी...।।२।।

तू ही मेरा सेठ और, तू ही साहुकार है,
व्याज पर व्याज मत जोड़ना।।
प्रभुजी...।।३।।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
बांह पकड़ मत छोड़ना।।
प्रभुजी...।।४।।

।। श्री सद्गुरुदेव जी की आरती ।।

जय गुरुदेव दया के सागर दीनन हितकारी।
जय जय लीलानन्द रुपवर, गुरु मूरति प्यारी,
जय गुरुदेव...।।टेर।।

तुम बिन लीलाधाम हृदय में कौन प्रकाश करे,
बिना तुम्हारे अधर दयानिधि को मृदु हास भरे,
यदि हो कृपा तुम्हारी दमके उर में उजियारी,
जय गुरुदेव...।।१।।

काम क्रोध मद मोह सकल दुर्भाव द्वेष हर दो,
सत्य अहिंसा भ्रातृभाव जन मानस में भर दो,
प्यार की फसल धरनि पर उपजे हरी भरी न्यारी,
जय गुरुदेव...।।२।।

चार धाम और सात पुरी हैं तीरथ बहुतेरे,
गुरु के ज्ञान बिना नहिं बिनसे दुख-दारिद्र घेरे,
सुख सम्पत्ति के दाता मुनिवर तुम हो अवतारी,
जय गुरुदेव...।।३।।

तुम स्वामी करुणा वरुणालय तुम अवढ़र दानी,
भव सागर से पार करो मैं मूरख अभिमानी,
मेरे मन मन्दिर में बिहरो प्रभु लीलाधारी,
जय गुरुदेव...।।४।।

।।हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

।। श्री कुञ्जबिहारी जी की आरती ।।

आरती कुञ्जबिहारी की, श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की।।

गले में वैजन्ती माला, बजावै मुरली मधुर वाला।
श्रवण में कुण्डल झलकाला, नन्द के आनन्द नन्दलाला।
आरती कुञ्जबिहारी की, श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की।।१।।

गगन सम अंग कान्ति काली, राधिका चमक रही आली,
चन्द्र सी झलक, कस्तूरी तिलक, भ्रमर सी अलक,
ललित छवि श्यामा प्यारी की।।
आरती कुञ्जबिहारी की, श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की।।२।।

कनकसम मोर मुकुट बिलसै, देवता दरसन को तरसै,
गगन से सुमन राशि बरसै, बजै मुरचंग, मधुर मृदंग,
ग्वालिनी संग, अतुल रति गोपकुमारी की।।
आरती कुञ्जबिहारी की, श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की।।३।।

जहाँ से प्रकट भई गंगा, सकल मल हारिणी श्री गंगा,
बसी शिव शीश, जटा के बीच, चरण छवि श्री बनवारी की।।
आरती कुञ्जबिहारी की, श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की।।४।।

बाज रही यमुना तट बेनु, लिये संग गोपी ग्याल धेनू,
हंसत मृदु मन्द, कटत भवफन्द, वृन्दावन चंद,
टेर सुनु दीन दुखारी की।।
आरती कुञ्जबिहारी की, श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की।।५।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

पुष्पांजली

हे रामा पुरुषोत्तमा नरहरे नारायणं केशवा।

गोबिन्द गरुड़ध्वजः गुणानिधे दामोदर माधवः।
हे कृष्ण कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते।
बैकुण्ठाधिपते चराचरपते लक्ष्मीपते पाहिमाम्।।

आदौ राम तपो वनादि गमनम् हत्वा मृगा काञ्चनम्।
वैदेही हरणं जटायु मरणं सुग्रीव सम्भाषणम्।।

बाली निर्दलनं समुद्र तरणम् लंकापुरी दाहनम्।
पश्चाद्रावण कुम्भकर्ण हननं एतद्धि रामायणम्।।

आदौ देवकी देवगर्भ जननं गोपी गृहे वर्द्धनम्।
माया पूतन जीवताप हरणं गोबर्द्धनो धराणम्।।

कंसाच्छेदन कौरवादि हननम् कुन्ती सुता पालनम्।
एतद् श्रीमद्भागवत् पुराण कथितं श्रीकृष्णलीलामृतम्।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव,
त्वमेव विद्या च द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्व मम् देव देवः।।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।